₹२०

ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

पौष २०७६ जनवरी २०२०

॥ २६ जनवरी गणतंत्र दिवस ॥

अब घर बैठे कीजिये आई.ए.एस. की तैयारी क्योंकि हम आ रहे हैं आपके घर

दृष्टि The Vision | drishti

Think IAS Think Drishti

जानकारी के लिये कॉल करें- 9319290700 9319290701 9319290702
या सिर्फ मिस्ड कॉल करें- 8010600300

आई.ए.एस. प्रिलिम्स ऑनलाइन कोर्स
(IAS Prelims Online Course)

प्रिय विद्यार्थियो,

संसाधन की कमी अक्सर हमारी उड़ान को सीमित कर देती है। हममें आगे बढ़ने की तड़प तो खूब होती है किंतु उसे साकार करने वाले साधनों का अभाव हमें मायूस कर देता है। पिछले कुछ समय से देश के विभिन्न हिस्सों से आप जैसे हज़ारों विद्यार्थियों ने हमें इस आशय के संदेश भेजे कि वो सिविल सेवा में जाने की इच्छा तो रखते हैं किंतु इसकी तैयारी के लिये दिल्ली में रहने का भारी-भरकम खर्च उठा पाना उनके लिये संभव नहीं है। साथ ही आपने हमसे यह अपेक्षा भी व्यक्त की कि हम ऐसी कोई व्यवस्था करें जिसमें आप घर-बैठे दृष्टि की कक्षा कार्यक्रम जैसी गुणवत्तापरक क्लास कर पाएँ। आपके इन्हीं निवेदनों को ध्यान में रखते हुए हम अपना पहला 'पेन ड्राइव कोर्स' जारी कर रहे हैं जो आई.ए.एस. प्रिलिम्स के पाठ्यक्रम पर केंद्रित है। इसमें आप सामान्य अध्ययन तथा सीसैट के कोर्स ले सकते हैं। लगभग 2 वर्षों की कठोर मेहनत से तैयार हुआ यह वीडियो कोर्स गुणवत्ता में अच्छे से अच्छे क्लासरूम प्रोग्राम को टक्कर दे सकता है। हमें विश्वास है कि यह कोर्स उस अंतराल को भरने में सफल होगा जो दिल्ली में रहकर तैयारी करने वाले और दिल्ली नहीं आ पाने वाले विद्यार्थियों के बीच बना रहता है। निकट भविष्य में हम IAS मुख्य परीक्षा और विभिन्न राज्यों की PCS परीक्षाओं के लिये भी ऑनलाइन कोर्स शुरू करेंगे।

एडमिशन प्रारंभ

पहले 500 विद्यार्थियों को 20% की विशेष छूट

मोड : पेन ड्राइव

कक्षाओं की गुणवत्ता को परखने के लिये डेमो वीडियोज़ हमारे यूट्यूब चैनल **Drishti IAS** की प्लेलिस्ट **Online Courses** में देखें

ऑनलाइन कोर्स से जुड़ी हर जानकारी के लिये हमारी वेबसाइट **www.drishtiias.com** पर **FAQs** पेज देखें

IAS प्रिलिम्स ऑनलाइन कोर्स की विशेषताएँ

1. 500+ घंटे की सामान्य अध्ययन की कक्षाएँ।
2. 120+ घंटे की सीसैट की कक्षाएँ।
3. प्रत्येक कक्षा को 3 बार देखने की सुविधा ताकि आप रिवीज़न भी कर सकें।
4. कक्षाओं में डिजिटल बोर्ड का इस्तेमाल। इमेज़, वीडियो आदि की मदद से कठिन विषय समझाने की शैली।
5. हर क्लास के अंत में उस टॉपिक से IAS में पूछे गए और अन्य संभावित प्रश्नों का अभ्यास।
6. स्टेट-ऑफ-द-आर्ट कैमरा और साउंड क्वालिटी जो क्लास के अनुभव को एकदम वास्तविक जैसा बनाती है।
7. प्रिलिम्स के ठीक पहले करेंट अफेयर्स की 30 ऑनलाइन कक्षाएँ (निःशुल्क)।
8. ऑनलाइन प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़ (25+5 टेस्ट) की निःशुल्क सुविधा।
9. क्विक बुक सीरीज़ की 8 पुस्तकें निःशुल्क, जिनके अलावा कोई और स्टडी मैटीरियल पढ़ने की ज़रूरत नहीं।
10. इस कोर्स में नामांकन लेने के बाद अगर आप दृष्टि की किसी भी शाखा में सामान्य अध्ययन के फाउंडेशन कोर्स में दाखिला लेते हैं तो आपकी ऑनलाइन कोर्स की फीस की 50% राशि के बराबर छूट दी जाएगी।

दृष्टि आई.ए.एस. (दिल्ली) : 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
☎ 87501 87501

दृष्टि आई.ए.एस. (प्रयागराज) : ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
☎ 8750187501

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

पौष	२०७६	▪ वर्ष ४०
जनवरी	२०२०	▪ अंक ६

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

हम कई बार कहानियाँ पढ़ते हैं। पढ़ते समय लगता है - ''यह सब तो किस्से कहानियों में होता है। वास्तविकता में तो ऐसा कर पाना भी असंभव है।'' किन्तु मैं आपको हर बार विश्वास दिलाता हूँ - ''महापुरुष मरने के बाद नहीं बनते बल्कि जीते जी ही महान हो जाते हैं।''

श्रवण कुमार की कहानी आपने कई बार पढ़ी होगी। कावड़ में बैठाकर अपने माता-पिता को तीर्थयात्रा करवाने वाले आदर्श पुत्र की। आइए आज आपका परिचय करवाता हूँ आधुनिक युग के श्रवण कुमार से। नाम है इनका डी. कृष्ण कुमार। इनकी माताजी की अवस्था है ७० वर्ष। संयुक्त परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वाह करती माताजी कभी अपने गाँव से बाहर नहीं निकल पाईं। बस, ट्रेन के तक मुँह नहीं देखे। बेटे ने एक दिन माँ से स्नेहपूर्वक पूछा- ''आपकी कोई इच्छा हो तो बताओ?'' माँ ने कहा- ''मरने से पहले तीर्थ करना चाहती हूँ। गाँव के अलावा कुछ नहीं देखा अब तक।'' बस डी. कृष्ण कुमार ने तुरंत अपनी नौकरी से त्यागपत्र दिया और अपने २० वर्ष पुराने बजाज चेतक स्कूटर को माँ की यात्रा के लिए सुविधाजनक बनाया और आवश्यकता की सामग्री लेकर निकल पड़े तीर्थाटन को। वृद्धा माता को अपने हाथों से स्नान करवाकर उनके बालों पर कंघी फेरते यह सपूत रोज हजारों तीर्थों का पुण्य कमाता है।

अब तक ४८ हजार १०० कि.मी. की यात्रा कर चुके माता और पुत्र जहाँ रात्रि होती है किसी मठ या मंदिर में रात्रि विश्राम कर फिर आगे की यात्रा पर निकल पड़ते हैं। उनकी इस मातृभक्ति यात्रा का एक वीडियो किसी ने ट्वीटर पर डाला तो उसे महिन्द्रा कम्पनी के मालिक और उद्योगपति आनंद महिन्द्रा ने देखा। उन्होंने तुरंत घोषणा की- ''मैं डी. कृष्ण कुमार को अपनी कम्पनी की सबसे अच्छी कार KUV100NXT भेंट में दे रहा हूँ ताकि वे जब अगली बार माताजी को लेकर तीर्थ पर निकलें तो माँ को इतनी भी असुविधा न हो।''

तो देखा बच्चो! श्रवण कुमार तो हम सबके अन्दर बसा हुआ है बस उसे थोड़ा बाहर लाने की आवश्यकता है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- बेटी मेरी गुरु - पवित्रा अग्रवाल ०५
- जोड़ना या खोलना - डॉ. चेतना उपाध्याय ०८
- दादी महान - डॉ. सेवा नन्दवाल १६
- बेपरवाह बच्ची - पद्मिनी अबरोल १९
- अमूल्य निधि - सुकीर्ति भटनागर २६
- अनोखा त्यौहार - अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' ३८
- साँस : गले की फाँस - डॉ. अमिताभ शंकर चौधरी ४६

लघु कहानी

- कुत्ता और बकरी - मीरा जैन ४५

संवाद

- पद्म पुरस्कार - शंकरलाल माहेश्वरी १२

कविता

- जय गणतंत्र विधान - डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०७
- क्रांतिकारी छात्र सुभाष - रामकुमार गुप्त १४
- बच्चे हिन्दुस्तान के - डॉ. मधुसूदन साहा २१
- अन्न बचत - डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' ३२
- कुचुर कुचुर खा लो - रावेन्द्र कुमार 'रवि' ३३
- भारत भू का गुणगान - बलबीर सिंह ४३
- कुल का दीप हमारी... - राजेन्द्र देवधरे 'दर्पण' ४३
- चंदा मामा - महेन्द्र सी. कपिल ४५

बाल प्रस्तुति

- मेरा देश - सविता पटेल ०६
- विवेकानंद - अनीता सेठिया २८
- रखवाले - अमित जैन ३५

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - ११
- स्वयं बनें वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी २०
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे २२
- गाथा वीर शिवाजी की (३५) - २४
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल २९
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी ३०
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ३५
- विषय एक कल्पना अनेक - डॉ. सीताराम गुप्त दिनेश ३६
  - मनोज कुमार तिवारी ३७
- यह देश है वीर जवानों का - ४०
- छः अंगुल मुस्कान - ऋषिमोहन श्रीवास्तव ४२
- आपकी पाती - ४२
- पुस्तक परिचय - ४४

चित्रकथा

- पुराना फूलदान - देवांशु वत्स १८
- गुण - संकेत गोस्वामी ३४
- राम की समझदारी - देवांशु वत्स ४८

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

॥ बालिका दिवस : २४ जनवरी ॥

बेटी मेरी गुरु

कहानी

पवित्रा अग्रवाल

रमा ५–६ घरों में खाना बनाने का काम करती है पर वह अनपढ़ है अंकों को भी पढ़ना उसे नहीं आता। यहाँ तक कि वह घड़ी भी नहीं देख सकती पर किसी से यह कहते शर्म आती थी कि उसे घड़ी देखनी भी नहीं आती कई घरों में तो वह अन्दाजा लगा कर किट–किट करती थी कि आज काम बहुत है मुझे आए डेढ़ घंटा हो गया। एक दिन अम्मा ने घड़ी लगाकर सामने रख दी बता अभी कितने बजे है। वह शर्मिंदा थी उस दिन से उसने समय की बात करना बंद कर दिया था। पर पगार वाले दिन उसकी छुट्टी को लेकर सबसे किरकिरी होती थी। कई काम छूट भी जाते थे।

आज रमा बहुत खुश है। आज सबसे महीने की पगार लेकर आई है कहीं किसी से किरकिरी नही हुई, और इस बार उसने अपने छुट्टी का हिसाब केलेंडर पर निशान लगा कर खुद रखा था। उसे दो तीन महीने पहले का वह दिन याद आया। जब उसे उदास देखकर उसकी बेटी ने कहा था– ''अम्मा! तुम फिर परेशान दिख रही हो। जहाँ काम करती हो वहाँ फिर बहस कर आई क्या?''

''हाँ, गुप्ता जी के यहा काम करती हूँ उनके हिसाब से मैंने १० छुट्टी की हैं पर मेरे हिसाब से ६ हुए हैं।''

''तो क्या वह झूठ बोल रही हैं?''

''बिलकुल झूठ बोल रहीं हैं, पता नहीं इतने पैसे वाले कैसे हम गरीबों से बेईमानी कर लेते हैं?''

''अम्मा! तुम्हे सब बेईमान ही क्यों मिलते हैं? इसी बात पर तुम्हारे कितने ही काम छूट चुके हैं, इतनी बार तुम से कहा कि कम से कम रोज की जिंदगी में काम आने वाला हिसाब तो सीख लो, अरे ज्यादा कुछ नहीं कम से कम १ से ३१ तक के अंक तो पहचानना सीख लो। जिस दिन काम पर नहीं जाओ उस दिन निशान लगा लो, पर तुम कुछ सीखना ही नहीं चाहती। अंक पहचानना सीख लोगी तो मोबाइल पर नंबर मिलाना भी आ जाएगा।''

''मैं सीखना तो चाहती हूँ पर अब इस सब में मेरा मन नहीं लगता। मुझे यह भी लगता है कि नहीं सीख पाई तो तुम सब मेरा मजाक उड़ाओगे।''

''गुप्ता जी का काम है या यह भी छूट गया?''

''आज तो जाते जाते बच गया पर'' अम्मा बहुत गुस्से में थी। कह रही थी कि ''मेरे पास चार काम वाले आते हैं जिस दिन जो छुट्टी करता है उसका नाम लिखकर कट मार देती हूँ और वह सब ६–७ साल से काम कर रहे हैं पर आज तक हिसाब को लेकर किसी से किरकिरी नहीं हुई, तुम्हें आये ४ महीने भी नहीं हुए पगार लेते समय हर बार किट किट करती हो, हमें बेईमान समझती हो। अब यह अंतिम मौका तुम्हें दे रही हूँ या तो हिसाब लिखना सीखो या फिर मुझ पर विश्वास करो या फिर काम छोड़ दो।

''अम्मा! वह गलत होती तो दूसरे भी तो शिकायत करते?''

''करते भी हों तो मुझे क्या पता।''

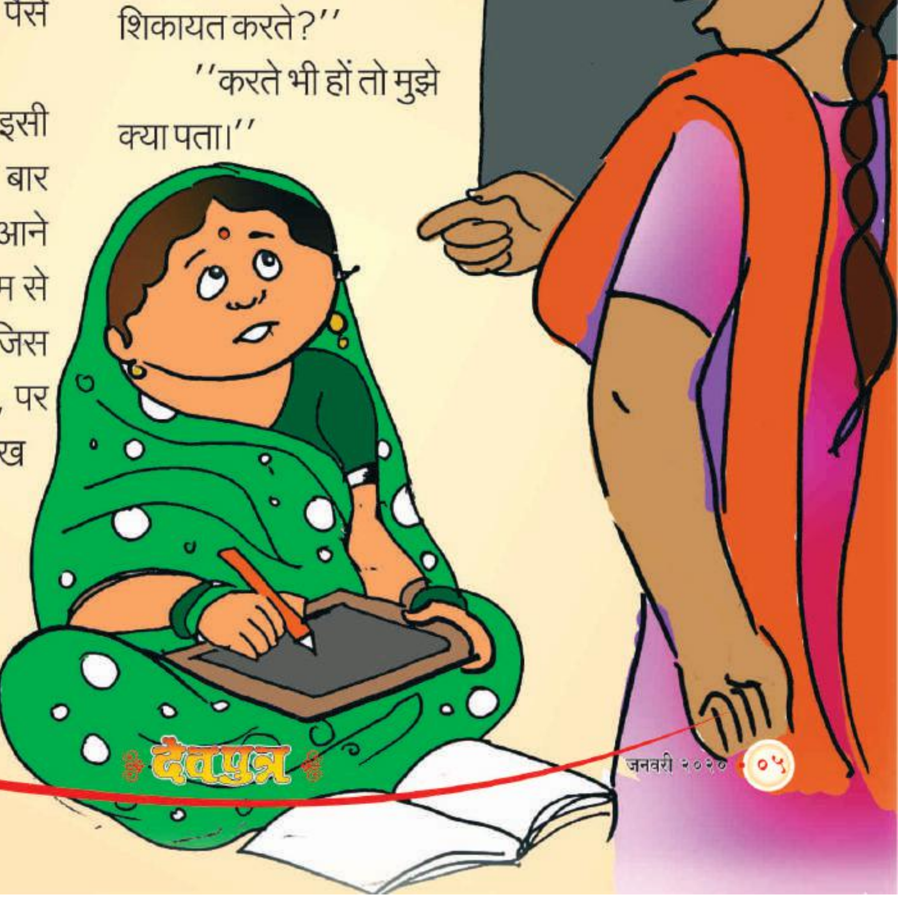

''अम्मा! फिर वही शक। उन्होंने बिलकुल सही कहा है उनकी जगह मैं होती तो मैं भी यही कहती। अब तो यही एक तरीका है या तो तुम अपना हिसाब रखना सीखो या उन पर चुपचाप विश्वास कर लो। माँ तुम भी तो पाँच–छह घरों में काम करती हो सबका हिसाब बिना लिखे तुम कैसे याद रखती हो? इसीलिए तुम्हारी सबसे किरकिरी होती है और आगे भी होती रहेगी। सबके यहाँ तुम एक ही दिन छुट्टी नहीं करती। कभी किसी के यहाँ छुट्टी करती हो और कभी किसी के यहाँ, कैसे याद रखती हो? जरूर तुम से गलती होती होगी, कल से तुम केलेंडर में लिखी संख्या पहचानना सीखो, कोई मजाक नहीं उड़ाएगा, मैं सिखाऊँगी। जब तक नहीं सीख लेती बिना भूले मुझसे केलेंडर पर निशान लगवा लिया करो।''

''शायद तू ठीक कह रही है, कल से मुझे सिखाना शुरु कर दे और तुझ से निशान भी लगवा लिया करूँगी...वैसे अम्मा भी कह रही थी आगे से तेरी छुट्टियों के निशान तुझसे ही लगवाऊँगी पर अभी मैं उन्हें नहीं बताऊँगी कि मैं भी घर पर हिसाब रख रही हूँ।''

इस बात को तीन महीने हो गए।

बेटी के विद्यालय से आने पर रमा ने कहा ''बेटी! अभी तक तुमने मुझे अंक पहचानना ही सिखाया है अब मुझे लिखना भी सिखा दे और जोड़ना, घटाना भी, और अ आ इ ई भी लिखना पढ़ना सीखना चाहती हूँ और एक दिन मोबाइल पर नंबर मिलाना भी सिखा दे।''

''ठीक है माँ! मोबाईल पर नम्बर मिलाना तो आज ही सिखा दूँगी पर मुझे गुरु दक्षिणा देनी पड़ेगी।''

''बोल तुझे क्या चाहिए?''

''ज्यादा कुछ नहीं बस एक वचन दो कि जहाँ तक मैं पढ़ना चाहूँगी मुझे पढ़ने दोगी।''

''हाँ गुरुजी! वचन दिया, अब तो खुश?''

''धन्यवाद माँ।''

● **हैदराबाद (तेलंगाना)**

।। बाल प्रस्तुति ।।

मेरा देश

कविता

सविता पटेल

मेरा भारत देश महान,
नाम इसी का हिन्दुस्तान
जग में सबसे प्यारा देश
इसके आगे और न देश
यहाँ की मिट्टी सौंधी है
इसकी गंध अनोखी है
देश में भरे किसान हैं।
जिससे देश की शान है
मेरा देश महान है,
करते सब सम्मान है।

● खरसिया (म.प्र.)

जय गणतंत्र विधान

कविता

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

जय गणतंत्र विधान।
गूँज रहे हैं दिग् दिगन्त -
जन-गण-मन के गान।।
सभी जातियों सब धर्मों के,
लोग यहाँ हैं रहते।
एक दूसरे के सुख दुख सब,
मिल जुलकर हैं सहते।
कोई बड़ा न कोई छोटा-
सब हैं एक समान ।।
सब स्वतंत्र है, सब उन्नति के
गिरि पर हैं चढ़ सकते।
सब जीवन में आगे-आगे,
आगे हैं बढ़ सकते।
सबके हैं अधिकार असीमित-
है कर्त्तव्य महान।।
संविधान के रक्षक बनकर,
ऐसा करें विकास।
स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो-
भारत का इतिहास।
युगों -युगों तक बढ़ती जाए-
राष्ट्र ध्वजा की शान।।

• हरदोई (उ.प्र.)

तोड़ना या खोलना

कहानी
डॉ. चेतना उपाध्याय

राजू ने खिलौने को हाथ लगाया ही था कि, अजय नाराज हो जोर से चिल्ला पड़े...''खबरदार, जो तूने इस खिलौने को हाथ लगाया तो। हाथ तोड़कर गले में लटका दूंगा तेरे। कबाड़ी कहीं का... तेरे तोड़ने के लिए नहीं लाता मैं इतने महंगे-महंगे खिलौने। हम बच्चा समझकर खेलने देते हैं तो यह कबाड़ी सर पर ही चढ़ा जा रहा है। चल निकल हमारे घर से।'' उन्होंने गुस्से में बोलते हुए उसे बाहर की तरफ धकेल दिया और स्वयं अपने कार्यालय चल दिए। चलते-चलते मुझे भी निर्देश देते गए कि ''ध्यान रखना जरा कहीं आँख बचाकर यह भी तोड़ न दे वो...''

इनकी गाड़ी रवाना होने तक राजू वहाँ दीवार के सहारे मूर्ति बना खड़ा रहा, फिर जब गाड़ी आँखों से ओझल हो गई तो दौड़ता हुआ मेरे पास आया और बोला ''ताई! आप समझाइये ना ताऊजी को वे समझते ही नहीं है और मुझे बेमतलब के डांटते रहते हैं। उनको समझ ही नहीं आता कितनी बार समझाया मैंने, तोड़ना अलग होता है, खोलना अलग। मैंने उस खिलौने को खोला था यह देखने के लिए कि वो कैसे काम करता है। उसको, तोड़ना थोड़े ही कहते हैं। आपको पता है मैंने उसको देखकर बिलकुल वैसा ही दूसरा खिलौना बना भी लिया। आपके खिलौने को जोड़ रहा था कि ताऊजी ने देख लिया और दो थप्पड़ मारे और खिलौना मुझसे छीन लिया, पूरा जोड़ने भी नहीं दिया। मैंने बहुत बार बोला मुझे जोड़ने दो मैं पूरा जोड़ दूंगा, पीछे-पीछे गया भी उनके, पर वे मुझे धमकाते रहे, मेरी बात भी नहीं सुनी। अधूरे खिलौने को वहाँ ऊपर दुछत्ती पर डाल दिया और पता है उसके पेंच भी रास्ते में गिरा दिये। मैं पीछे-पीछे आ रहा था तो दो पेंच मुझे दिख गए तो मैंने उठा लिए...'' वह धारा प्रवाह बोले जा रहा था निडरता से...उसने झुककर पेंच उठाने का अभिनय किया तो मुझे उसकी सरलता पर हँसी आ गई।

मेरे चेहरे की मुस्कान उसके लिए प्रेरणास्रोत का कार्य कर गई। वह भी मुस्कुराते हुए बोल, ''ताई! आप मुझ पर विश्वास करते हो ना? इसीलिए तो मैं आपको सच-सच बता रहा हूँ। नहीं तो ताऊजी पर इतना गुस्सा आ रहा था कि मैं कभी नहीं बताऊँगा कि उस वाले खिलौने के दो पेंच मेरे पास है। ना जाने कितने और उन्होंने रास्ते में गिरा दिये होंगे। उनको खुद को भी नहीं पता तो ज़ोड़ेंगे कैसे? आप ही देख लो वो वाला खिलौना अभी तक भी वहीं वैसा का वैसा पड़ा है। मुझे थोड़ी देर काम करने देते तो मैं उसी समय जोड़ देता। इतना प्यारा खिलौना देखो ताऊजी की वजह से यों अटाले में पड़ा है''

राजू ने गर्व के साथ कहा।

उसके इस रौबीले अन्दाज को देखकर मुझे पुनः हँसी आ गई। इतने छोटे से बच्चे में इतना अद्भुत आत्म विश्वास, मेरा रोम–रोम पुलकित सा हो गया। फिर भी मैंने उसकी परीक्षा लेने के उद्देश्य से पूछा, ''तुम जोड़ सकते हो उसे? जैसे वह पहले था वैसे का वैसा ही।'' ''हाँ–हाँ ताई! आधा घण्टे में जोड़ दूंगा। पर आप ताऊजी को समझा देना मुझे थप्पड़ नही मारे। वे बहुत जोर से मारते हैं। दो दिन तक मेरे गालों पर निशान लगे हुए थे।'' वह गालो को सहलाते हुए बोला।

''हाँ बेटे! तुम सही कह रहे हो। पर ताऊजी, मुम्बई से वह खिलौना लाए थे। बहुत महंगा था वह, इसलिए उन्हें गुस्सा आ गया होगा तुम पर। अब देखो ना वह नया का नया खिलौना वहाँ धूल खा रहा है। कितने मन से लाये थे वे छोटू के लिए। छोटू ठीक से दो दिन भी नहीं खेल पाया। तो उन्हें गुस्सा आना ही था।''

''अरे ताई! गुस्सा करने से क्या होता है। थोड़ा

दिमाग लगाते तो काम बनता ना। देखो मैंने दिमाग लगाया तो बिना पैसे के बिलकुल वैसा का वैसा खिलौना मैने बना भी लिया। ताऊजी तो खाली पैसा कमाने में ही अपना दिमाग लगाते हैं। उस बन्दर (खिलौना) को जोड़ने में लगाते तो वो भी जुड़ जाता और छोटू भी उससे मजे से खेलता। आपको प्रमाण दिखाऊँ?''

''ठीक है दिखाओ! ''मेरी स्वीकारोक्ति मिलते ही वह सरपट दौड़ गया अपने घर। थोड़ी देर में ही वापस उछलता हुआ खिलौना साथ ले लौट आया मेरे पास... ''अरे वाह! यह तो हू–ब–हू बिल्कुल वैसा ही है।'' ''हाँ ताई! आगे भी देखिए मेरा जादू...'' कहते हुए उसने स्थान साफ किया बन्दर को रखने की जगह बनाई। फिर अपने छोटे–छोटे हाथों से उसमें चाबी घुमाई और बन्दर को जमीन पर धीरे से रख दिया... अरे वाह! बन्दर जोर से उछला, एक बार हाथ में लगी डफली बजाई फिर दोबारा से उछला, फिर तीन बार डफली बजाई और तीन गुलाटियाँ मारी उसके बाद बन्दर हाथों से डफली बजाते–बजाते उछलता–उछलता दूर दीवार तक चला गया वहाँ फिर से तीन गुलाटी मारी फिर एक गुलाटी मारी, डफली बजाई और रुक गया।

राजू भी साथ में ताली बजाते–बजाते उछलते हुए खिलखिलाने लगा। उसकी निश्चल हँसी व सरलता देख मेरा भी रोम–रोम पुलकित हो गया, उसे बाहों में जकड़ चूमते हुए कहा ''शाबाश बन्दर हू–ब–हू वैसा ही था और वैसा ही कलाबाजियां कर रहा था जैसा हमारे वाला खिलौना था।'' मैंने तुरंत ही उससे पूछा ''कैसे बनाया तुमने?'' मैं तो आश्चर्य चकित हो उसे देखती ही रह गई। रसोई में गैस पर चढा दूध का भगोना भूल ही गई। दूध बहता हुआ बरामदे में आ गया तब ध्यान गया वहाँ।

राजू ने झट से मेरा हाथ पकड़ पुनः बरामदे में खींच लिया और बोला ''दूध तो उफन चुका, गैस मैंने बंद कर दिया है। आप सफाई बाद में करते रहना। पहले देख लो मैंने कैसे बनाया है। नहीं तो ताऊजी वापस घर आ गये तो बन्दर फिर से अधूरा ही छूट जाएगा।'' मुझे तिपाई पर

बैठाते हुए बोला ''अब बताऊँ? कैसे बनाया...''

''हाँ बेटा! बताओ...'' ''देखो ताई! सबसे पहले तो मैंने आपके वाला बन्दर ध्यान से देखा। चाबी लगाकर देखा और सब कुछ लिखता गया। फिर मैंने स्क्रू से उसके पेंच खोले। अन्दर से देखा और समझा कि कैसे उसमें स्प्रींग काम करती है। जब मैं सब समझ गया तो वहाँ से हमारे स्टोर में गया वहाँ से सामान ढूंढा, फिर वे सुबह-सुबह वो कबाड़ी काका आते हैं कबाड़ा सामान, टूटा फूटा सामान जो खरीदते है। उनके ठेले पर ढूंढा, वे हमारे घर पर अखबार की रद्दी तोल रहे थे। हिसाब पूरा करते-करते वो माँ से लेन देन पर मोलभाव करते रहे ओर मैंने तब तक उस ठेले पर से बन्दर का सिर टूटा पड़ा था उठा लिया। एक गिर्री भी उठा ली थोड़ी स्प्रींग भी मिल गई। फिर काका से पूछा, ले लूं, उन्होंने कहा ले ले। माँ ने डांटा टूटी स्प्रींग हाथ में लग जायेगी मत उठा, और यह टूटा हुआ बन्दर के सिर का क्या आचार डालेगा। रख दे वहीं वापस, पर मैंने मना कर दिया। अरे माँ आपको नहीं पता, मैं क्या कमाल दिखाने वाला हूँ। कहकर मैंने माँ को भी समझा दिया। कबाड़ी काका बोले ''अरे! जाने भी दो दीदी! बाल गोपाल है। पता नहीं कब ईश्वर इनके रूप में अपना रूप दिखा जाए। टूटा सिर है। मेरे किसी काम का नहीं खेलने दो बच्चे को...'' उनका हिसाब पूरा हुआ तो वे आगे चले गए। माँ अपने रसोई के काम में लग गई और मैं वहाँ बरामदे में बैठकर चुपचाप अकेले में यह खिलौना बनाने लगा। मेरा खिलौना बन गया, पूरा दिन लग गया। फिर आपका वाला वापस जोड़ रहा था कि इतने में ताऊजी की दृष्टि पड़ गई।

अकारण ही मेरी पिटाई हो गई और आपका वाला खिलौना अधूरा ही रह गया। यह सब ताऊजी की ही गलती है। मेरी कोई गलती नहीं है,'' उसने सफाई देते हुए कहा। राजू ने तो मुझे बिलकुल निःशब्द ही कर दिया था। मात्र ८-९ वर्ष का बच्चा इतनी चपलता से सब कुछ साफ-साफ बता रहा था। प्रमाण के तौर पर उसके द्वारा बनाया बन्दर उछल-उछल कर उसकी सफाई प्रस्तुत रहा था। मैं असंमजस में भी कि पति की आज्ञा का पालन करूँ? या इस तेजस्वी ऊर्जावान बालक को प्रोत्साहन करूँ? बालक राजू तो जैसे मेरे मन-मस्तिष्क पर छाया हुआ था। अजय तो शाम को लौटेंगे। खिलौना पुनः जुड़ गया तो बन्दर की कलाबाजियाँ देखकर उनका गुस्सा भी ठण्डा हो जाएगा। छोटू भी अपने खिलौने की उछल कूद देखकर कितना प्रसन्न होगा और राजू के आत्मविश्वास में भी थोड़ा सा और सकारात्मक परिवर्तन आ जायेगा, यह सोच मैंने उसे दुछत्ती पर से टूट हुए, अरे नहीं-नहीं खुले हुए बन्दर को उठाकर लाने और उसे जाड़ने की सहमति दे दी।

कुछ ही देर में उसने इधर-उधर से जुगाड़ बैठाकर उछलता, कूदता बन्दर तैयार कर दिया और अपनी उपलब्धि पर खुद ने ही खूब तालियाँ बजाई। मेरे हाथ भी कब उसके सुर में सुर मिलाते हुए ताली बजाने लगे पता ही नहीं चला। एक सहज प्रसन्नता जो जीवन में मैंने पहली बार अनुभव की। आँखों से खुशी के आँसू टपक पड़े।

राजू बोला ''ताई! अब क्यूं रोती हो? आपका महंगा वाला खिलौना जुड़ गया और बिलकुल पहले जैसा ही लग रहा है।'' ''अरे बेटा! यह तो आनंद के आँसू है।'' ''अच्छा...? तो आँसू भी दो प्रकार के होते है एक प्रसन्नता के दूसरे दुःख के।'' ''अच्छा ताई! अब मैं चलता हूँ। मेरा काम ताऊजी के आने से पहले ही पूरा हो गया।

पर हाँ ताऊजी! को अच्छे से समझा देना मेरे से पंगा नहीं लेने का क्या? और दूसरी बात यह कि खोलना अलग होता है तोड़ना अलग। व्यर्थ मेरे ऊपर हाथ न उठाए।'' राजू ने हमारा खिलौना मेरे हाथ में पकड़ाया, अपना खिलौना उठाया और अपने घर की ओर सरपट दौड़ गया।

शाम को अजय की गाड़ी आने की आहट पाते ही राजू पुनः दौड़ते हुए आया मेरे पास और बोला...''याद है ताई! ताऊजी को क्या समझाना है। देखो तोड़ना अलग है, खोलना अलग। खोलने में दिमाग लगाना पड़ता है फिर जोड़ने में बुद्धि के साथ-साथ जुगाड़ भी लगाना होता है।

आप वह दूसरा वाला खिलौना भी मुझे खोलने देना। मैं एक और खिलौना वैसा भी बनाऊँगा। बिना पैसे में अच्छे-अच्छे खिलौने बनाकर गरीब बच्चों को बाटूँगा।'' मैं निरुत्तरित सी उसे देखती ही रह गई, इतना छोटा सा बालक कितनी बड़ी सोच रखता है। स्वयं अपने लिए खिलौने चाहने वाली उम्र में दूसरे गरीब बच्चों को खिलौने बनाकर देने की चाहत...। फिर नवीन खिलौने की निर्माण तकनीक को भी स्वयं ही समझना, बगैर किसी अन्य तकनीकी जानकार की सहायता के। स्वप्रेरित रूप में कार्य की तत्परता, कर्मठता, बुद्धिमत्ता भी गजब की ओर... यह तो कोई बिरला ही बालक है।

अजय ने भी घर में प्रवेश करते ही उस खिलौने को देखा तो अवाक् देखते ही रह गए। अरे वाह... मैंने झट से चाबी घुमाकर उसकी कलाबाजियाँ भी शुरू कर दी। छोटू के साथ वे भी खुशी के मारे उछल गए। मुझसे पूछा ''कैसे किया?''

''यह राजू ने किया है मेरे सामने। ओह! मैंने बड़े जोर से थप्पड़ मारे थे उसे तो।'' ''पता है वह नन्हा सा राजू खिलौने से खेलने की बजाय बगैर पैसे खिलौने बनाकर गरीब बच्चों को देने की इच्छा रखता है।'' मैंने बताया तो वे भी भाव विभोर हो उठे। और बोले ''इस महान बालक का हमें विशेष ध्यान रखना होगा। उसे उचित मार्गदर्शन, प्रोत्साहन व कार्य के साथ-साथ अकादमिक शिक्षा के भी समान अवसर मिलते रहे यह प्रयास करना होगा और हम ऐसा प्रयास करेंगे। मैं कल ही बाजार से दो खिलौने और लाकर उसे दूंगा प्रायश्चित के तौर पर। दो खिलौने प्रोत्साहन हेतु। इस तरह कल ही उसे चार खिलौने दूंगा। यह मेरा अपने को दिया वचन है। मैं राजू को बताऊँगा कि मैं अब समझ गया हूँ तोड़ना अलग होता है खोलना अलग।''

• **अजमेर (राज.)**

संस्कृति प्रश्नमाला

- **दण्डकारण्य में किस राक्षस ने माता सीता को निगल जाने का प्रयत्न किया था?**
- **हस्तिनापुर के सम्राट परीक्षित किनके पुत्र थे?**
- **प्राचीन मिस्र (ईजिप्ट) का पहला राजा मिनोस था। यह नाम किस भारतीय महापुरुष से सम्बन्धित है?**
- **नाथ सम्प्रदाय का केन्द्र भारत में कहाँ है?**
- **प्रसिद्ध उक्ति 'सत्यमेव जयते' किस उपनिषद् की है?**
- **भारतीय इतिहास में 'हूण जेता' किसे कहा जाता है?**
- **आयुर्वेद के प्रवर्तक कौन माने जाते हैं?**
- **नाना साहब पेशवा, महावीर तात्या टोपे तथा अजीमुल्ला खान के साथ १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम की योजना बनाने वाले चौथे महानायक कौन थे?**
- **वीरों की भूमि राजस्थान में एक बलिदानी युद्ध ऐसा भी हुआ है जिसे 'आधा साका' कहा जाता है। यह कहाँ हुआ था?**
- **किस न्यूरो वैज्ञानिक ने बताया कि संस्कृत बोलने से मस्तिष्क तेज होता है।**

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

पद्म पुरस्कार

संवाद

शंकरलाल माहेश्वरी

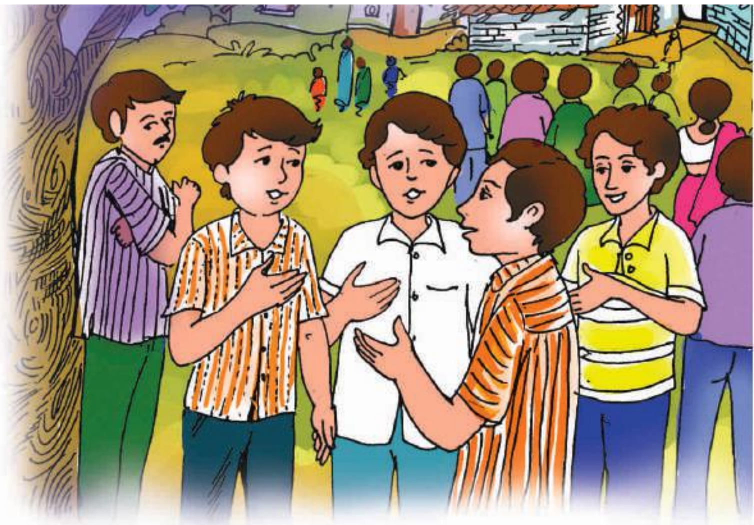

रोहित - किशोर भैया? बधाई हो आपने तो कमाल कर दिया।

किशोर - रोहित! आज सुबह ही सुबह किस बात की बधाई दे रहे हो?

रोहित - अरे मित्र! तुमने बेडमिन्टन खेल में राज्य स्तर पर कीर्तिमान स्थापित करके हमारे विद्यालय, गाँव तथा प्रदेश के गौरव को बढ़ाया है।

किशोर - यह सब राकेश गुरुजी! मेरे पिताश्री और राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत होने वाले अरविन्द जी की प्रेरणा से ही संभव हुआ है।

रोहित - किशोर भैया! अब वह दिन दूर नहीं है जब राष्ट्रीय स्तर विजेता घोषित होने पर तुम्हे पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

किशोर - यह कैसे संभव है?

रोहित - मित्र! यदि अपनी संकल्प शक्ति मजबूत हो, मेहनत में कमी न आये और दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो लोग आसमान के तारे भी तोड़ सकते हैं।

किशोर - तुम्हारा यह कथन सही हैं, मेरी बैडमिन्टन खेल में विशेष रुचि भी हैं और शौक भी। इसी खेल का अभ्यास लगातार करना चाहिए मुझे।

रोहित - क्रिकेट के प्रसिद्ध खिलाड़ी गौतम गंभीर का नाम तो सुना होगा उन्हे क्रिकेट खेल के शानदार प्रदर्शन के लिए पद्म श्री पुरस्कार मिला है।

किशोर - इसके लिए तो खूब मेहनत करनी होगी। गौतम गंभीर ने तो क्रिकेट को अपनी लक्ष्य बनाते हुए खूब परिश्रम किया तभी इस ऊँचाई को प्राप्त कर सके।

रोहित - भारत सरकार द्वारा दिये जाने वाले पद्म पुरस्कार के बारे में विस्तार से बताओ किशोर भैया!

रोहित - क्या यह पुरस्कार प्रतिवर्ष मिलता है?

किशोर - हाँ, प्रतिवर्ष कला, विज्ञान, उद्योग, व्यवसाय, शिक्षा, साहित्य, चिकित्सा, खेलकूद, समाजसेवा आदि क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करने वालों को प्रदान किया जाता है।

रोहित - यह पुरस्कार किस समय देते हैं?

किशोर - इन पुरस्कारों की घोषणा प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस (२६ जनवरी) पर की जाती हैं तथा मार्च, अप्रैल माह में प्रदान किये जाते हैं।

रोहित - यह पुरस्कार किनके द्वारा दिया जाता है?

किशोर - यह पुरस्कार मा. राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में प्रदान किये जाते हैं।

रोहित - क्या सभी को पद्म पुरस्कार ही दिये जाते हैं?

किशोर - नहीं, पद्म पुरस्कारों की तीन श्रेणियाँ है।

रोहित - वे कौन कौनसी हैं?

किशोर - १. पद्म विभूषण २. पद्म भूषण ३. पद्म श्री

रोहित - भैया ! मुझे इन पुरस्कारों के बारे में विस्तार से बताओ।

किशोर - तो सुनो!

१. पद्म विभूषण - भारत रत्न पुरस्कार तो इससे भी बड़ा है। उसके बाद दूसरे स्थान पर पद्म विभूषण पुरस्कार है। विशेष व असाधारण सेवाओं के लिए यह पुरस्कार दिया जाता है।

२. पद्म भूषण - भारत रत्न पुरस्कार के बाद तीसरे स्थान पर निर्धारित है जो उत्कृष्ट सेवा के लिए दिया जाता है।

३. पद्म श्री - पद्म पुरस्कारों में यह पुरस्कार तीसरी श्रेणी में है। भारत रत्न के बाद चौथे क्रमांक पर यह पुरस्कार आता है। चयनित महापुरुष इसके द्वारा सम्मानित होते हैं।

रोहित - किशोर! ये तो तुमने बताया ही नहीं कि पुरस्कारों को प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ता है?

किशोर - पुरस्कारों के लिए राज्य सरकार, संघ राज्य सरकार, केन्द्रीय मंत्रालय तथा उच्च कोटि की सेवा संस्थानों से नामों की सूची प्राप्त की जाती है।

रोहित - फिर क्या होता है?

किशोर - इसके बाद इस समिति द्वारा इन नामों पर विचार किया जाता है। समिति की अनुशंसा के बाद प्रधानमंत्री, गृहमंत्री तथा महामहिम राष्ट्रपति जी अपनी स्वीकृति देते हैं?

रोहित - आज इस कम्प्यूटर युग में भी यह परम्परावादी व्यवस्था चलती ही रहेगी क्या?

किशोर - नहीं रोहित, अब आवेदन प्रक्रिया में परिवर्तन हो गया है। १ मई २०१६ में केन्द्र सरकार ने एक ऑनलाइन पोर्टल का शुभारम्भ किया है। इस पोर्टल द्वारा कोई भी व्यक्ति अपना नाम प्रेषित कर सकता है।

रोहित - जो लोग पोर्टल का उपयोग नहीं कर पाते उनके लिए क्या सुविधा है?

किशोर - जो लोग निस्वार्थ भाव से समर्पित होकर देश सेवा में संलग्न है उनकी सूची सेवा भावी संस्थानों द्वारा भी भेजी जाती है जो मान्य है।

रोहित - क्या २०१९ में पद्म पुरस्कारों के लिए चयनित व्यक्तियों की जानकारी दे सकते हो?

किशोर - अवश्य, मैंने समाचार पत्रों तथा सूचना संसाधनों से ये सूची संकलित की है जो इस प्रकार है।

पद्म विभूषण - तीजन बाई, इस्माइल उमर गुलेह (विदेशी), अनिल कुमार मणिभाई नाइक, बलवंत मोरेश्वर पुरंदरे।

पद्मभूषण - जॉन चेम्बर्स (विदेशी), सुखदेव सिंह ढींड़सा, प्रवीण गोरधन, महाशय धर्मपाल गुलाटी, दर्शन लाल जैन, अशोक लक्ष्मणराव कुकड़े, करिया मुंडा, बुधादित्य मुखर्जी, मोहनलाल विश्वनाथ नायर, एस नांबी नारायण, कुलदीप नैयर (मरोणपरांत), बछेंद्री पाल, वीके शुंगलू, हुकुमदेव नारायण यादव।

पद्मश्री - राजेश्वर आचार्य, बंगारू आदिगलर, इलियास अली, मनोज बाजपेयी, उद्धव कुमार भाराली, ओमेश कुमार भारती, प्रीतम भर्तवान, ज्योति भट्ट, दिलीप चक्रवर्ती, मम्मी चांडी, स्वपन चौधरी, कंवल सिंह चौहान, सुनील छेत्री, दिनकर ठेकेदार, मुक्ताबेन पंकज कुमार दागली, बाबूलाल दहिया, थंगा दारलोंग, प्रभुदेवा, राजकुमारी देवी, भागीरथी देवी, बलदेव सिंह ढिल्लों, हरिका द्रोणावल्ली, गोदावरी दत्ता, गौतम गंभीर, द्रौपदी घिमिरय, रोहिणी गोडबोले, संदीप गुलेरिया, प्रताप सिंह हार्डिया, बुलु इमाम, फ्रेडरिके इरिना, जोरावर सिंह जादव, एस जयशंकर, नरसिंह देव जम्वाल, फैयाज अहमद जान, के जी जयन, सुभाष काक, शरथ कमल, रजनी कांत, सुदाम केवट, वामन केंद्रे पहलवान, बजरंग पुनिया, जगतराम, आर वी रमणी, देवरपल्ली प्रकाश राव, अनूप साह, मिलिना साल्विनी, नागिदास संघवी, सिरीविनेला, सीतारमा शास्त्री, शब्बीर सैय्यद, महेश शर्मा, मोहम्मद हनीफ खान शास्त्री, बृजेश कुमार शुक्ल, नरेंद्र सिंह, प्रशांति सिंह, सुल्तान सिंह, ज्योति कुमार सिन्हा, आनंदन शिवमणि, शारदा श्रीनिवासन, देवेन्द्र स्वरूप (मरणोपरांत), अजय ठाकुर, राजीव थरानाथ, शालुमारदा थिमक्का, जमुना टुडू, भारत भूषण त्यागी, रामास्वामी वेंकटस्वामी, राम शरण वर्मा, स्वामी विशुद्धानंद, हीरालाल यादव, वेंकटेश्वर राव यदलापल्ली, वल्लभाई वासाराभाई मारवानिया, गीता मेहता, शादाब मोहम्मद, के.के. मुहम्मद, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, दैतारी नाइक, शंकर महादेवन, नारायण, शांतनु नारायण, नर्तकी नटराज, टर्सिंग नोरबो, अनूप रंजन पांडे, जगदीश प्रसाद पारिख, गणपत भाई पटेल, बिमल पटेल, हुकुमचंद पाटीदार हरविंदर सिंह फूलका, मदुरै चिन्ना पिल्लई, ताओ पोर्चन-लिंच, कमला पुजारी दिवंगत, अभिनेता कादर खान, अब्दुल गफूर खत्री, रवींद्र कोल्हे, स्मिता कोल्ले, बोम्बायला देवी लेशराम, कैलाश मड़ैया, रमेश बाबाजी महाराज।

रोहित - बैडमिन्टन में विशेष दक्षता प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

किशोर - भैया! रोहित राष्ट्रीय स्तर पर अपना कीर्तिमान स्थापित करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। नियमित अभ्यास, दक्ष खिलाड़ियों का मार्गदर्शन, कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण और टीवी पर खेल चैनलों पर इस खेल का अवलोकन आवश्यक हैं ताकि तुम्हे प्रेरणा भी मिले और सही तकनीक की जानकारी भी हो सके।

रोहित - इसके अलावा और क्या तरीका हो सकता है।

किशोर - हमारे देश में साहित्य, कला और खेलों को प्रोत्साहन देने व प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए अकादमियां बनी हुई हैं जहाँ विशेष पारंगत प्रशिक्षण देते हैं। वहाँ जाकर अभ्यास का अवसर प्राप्त करना चाहिए।

रोहित - किशोर! आज तो तुमने मुझे पद्म पुरस्कारों की जानकारी के साथ जो प्रेरणा दी हैं इसके लिए मैं सदैव आभारी रहूँगा।

• आगूँचा (राज.)

।। सुभाषचन्द्र बसु जयंती: २३ जनवरी ।।

क्रांतिकारी छात्र सुभाष

कविता

रामकुमार गुप्त

शट अप ब्लैक हिन्दोस्तानी, कहकर उसने झकझोरा।
कालर पकड़े **डैम डाग** बकता था बालक गोरा।।
सहम गया बिल्कुल बेचारा, उस गुस्से से डर कर।
लज्जित हो, नीची आँखे कर, काँप रहा था थर-थर।।
रोब देख गोरे का, कक्षा में सन्नाटा छाया।
रक्षा में भारतीय छात्र के, एक न आगे आया।।
किन्तु पास बैठे साथी की, फड़क रही थी बाँहें।
ओठ काटता था, गुस्से से लोहित हुई निगाहें।।
चुप्पी देख सभी की, गोरा अधिक बिगड़ता जाता।
साथी की बदले की ज्वाला, और रहा भड़काता।।
कुछ ही क्षण में अध्यापक जी, उस कक्षा में आये।
किसी तरह वह बैठा था, सीने में आग दबाये।।
आज न लिखना पढ़ना था, कुछ उसे समझ में आता।
"डेम-डाग" का शब्द कान में, बार-बार टकराता।।
सोच रहा था- गोरों का, कब तक अपमान सहेंगे।
कब तक हम सब भारतवासी बुजदिल, मौन रहेंगे।।
घन्टा बीता किसी तरह, कक्षा से बाहर आया।
अपमानित उस सहपाठी को, अपने पास बुलाया।।
बोला- "मुझे न मालूम था, तुम होंगे इतने कायर।
क्यों न पकड़कर उसे रख दिया, फौरन वहीं मसल कर।।
मेरे साथ अगर उसने, की होती इतनी हिम्मत।
माँ दुर्गा की शपथ वहीं, कर देता मैं क्षत-विक्षत।।
रोकर बालक बोला- "क्या मैं वहाँ अकेला करता।
कोई साथ न देगा मेरा, यही रहा मैं डरता।।"
"भाई मेरे! एक अकेला भी कर सकता सर्बस।
दृढ़ संकल्प सहित यदि, रखता अपने मन में साहस।।
अब तक जो कुछ हुआ, न उस पर घबराओ, पछताओ।
"आगे क्या मैं अब करता हूँ, इसे देखते जाओ।।"
लेकिन भइया! डरते बालक, के मुँह से निकला स्वर।
"उस गोरे का बाप शहर में, बहुत बड़ा है अफसर।।"
"कितना भी हो बड़ा किन्तु वह तो भगवान नहीं है।
नहीं सभ्यता आती जिसको, वह इंसान नहीं है।।

अंग्रेजियत बड़प्पन का है, उसे नशा चढ़ आया।
बड़े बाप का बेटा बन कर फिरता है इतराया।।
जो भी उसने किया नहीं हम उसको माफ करेंगे।
कैसा हो परिणाम किन्तु हम तो इंसाफ करेंगे।।"
बालक बोला- "धन्यवाद है आप सत्य कहते हैं।
बुज़दिल मुर्दा है वे जो चुपचाप ज़ुल्म सहते हैं।।
इसी हमारी कमज़ोरी को गोरों ने पहचाना।
सौदागर से शासक बन, कर रहे ज़ुल्म मनमाना।।"
"अच्छा अब छुट्टी होने पर तुम मेरे सँग रहना।
और बताता हूँ जैसा बस वही मानना कहना।।
गोरे दुष्ट हमारी इज़्ज़त से ये खेल रहे हैं।
हम सब मूक बने अत्याचारों को झेल रहे हैं।।"
घुमड़ रहे ये भाव तभी, छुट्टी की घंटी बोली।
शोर मचाते कक्षा से बच्चों की निकली टोली।।
गोरा सब कुछ और निकलकर दूर अकेले आया।
साथी ने आ पास लगाकर, टँगड़ी उसे गिराया।।
टाई खींची झटक पैर से, दिया ज़ोर का धक्का।
अब गोरे की सिट्टी-पिट्टी गुम था हक्का-बक्का।।
"अब दुष्ट बदमाश विदेशी, बना घूमता राजा।
हिम्मत हो तो अभी सामने, मुझसे भिड़ ले आजा।।
बोल हमारे साथी का क्यों कर अपमान किया है।
सुन ले अंगारों का तूने न्यौता आज दिया है।।
आइन्दा यदि किसी छात्र से दुर्व्यवहार करेगा।
इतना रखना याद, किसी कुत्ते की मौत मरेगा।।"
तब तक लड़के बहुत दौड़कर घटना स्थल पर आए।
यह रोमांचक दृश्य देख, आश्चर्य चकित घबराये।।
कालर पकड़ वीर बालक ने, उसको पुनः उठाया।
और पैर की तगड़ी ठोकर देकर उसे भगाया।।
जिसमें साहस, जोश, वीरता की थी भरी उमंगें।
भारत माँ की आज़ादी, की मचली प्रबल तरंगें।।
"मुझे खून दो मैं आज़ादी दूँगा"- जिसका नारा।
बचपन का वह वीर छात्र नेता सुभाष था प्यारा।।

• **गोला गोकर्णनाथ (उ.प्र.)**

दादी महान

कहानी

डॉ. सेवा नन्दवाल

''दादी! हमारे यहाँ बहुत सारे त्यौहार मनाए जाते हैं न?'' कुश ने पूछा। ''हाँ, हमारे यहाँ त्यौहारों की बहुलता है इसलिए हम उत्सवधर्मी कहलाते हैं। वास्तव में प्रत्येक त्यौहार हमें अपने प्रकार से प्रेरणा देते हैं। मै समझ गई तुम क्यों पूछ रहे हो?'' दादी ने कहा। कुश दादी का मुँह देखने लगा मानो पूछ रहा हो– ''क्यों दादी?''

''क्योंकि हमारा एक बहुत मीठा मधुर त्यौहार दस्तक दे रहा है''– दादी ने हँसते हुए कहा। ''हाँ दादी, मकर संक्रांति। इस त्यौहार पर पतंगबाजी को खेल और मनोरंजन का साधन माना जाता है ना?'' कुश ने सहजता से पूछ लिया। दादी ने आंशिक संशोधन किया ''सिर्फ खेल और मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि इस अवसर पर उड़ने वाली छोटी–छोटी पतंगें हमें जीवन की बड़ी–बड़ी सीख दे जाती हैं।''

कुश उनके चेहरे को देखने लगा तो दादी हँसते हुए बोली– ''अब यह कहना कि सेवानिवृत्त प्राचार्य दादी हमेशा त्यौहारों में सीख संदेश की बातें ही ढूंढती रहतीं हैं।'' ''नहीं दादी! आपकी बातें अच्छी लगती हैं। आप बताइए पतंगबाजी से क्या सीख हासिल होती है?''– कुश ने अगला सवाल किया।

''बिलकुल बताऊँगी। सबसे पहली बात यह कि पतंग को धरती से आकाश तक ले जाने के प्रयासों से संघर्ष की प्रेरणा मिलती है। संघर्ष मात्र क्षमता के बल पर नहीं सधता उसके साथ सही समय का चयन भी आवश्यक है''– दादी ने समझाना प्रारंभ किया। ''हाँ दादी! समय प्रबंधन का सारे जीवन में बहुत महत्व है''– कुश ने स्वीकारा दूसरी बात यह कि पतंग की उड़ान पर नियंत्रण रखने का काम डोर का होता है। डोर कितनी भी मजबूत हो मगर उसमें उलझन या गांठ आ जाए तो पतंग उड़ाना दुष्कर हो जाता है। इसको यूं भी कह सकते हैं कि पतंग जितनी भी ऊँचाई पर पहुँच जाए उसके पीछे असली ताकत मांजा की होती है''– दादी ने विस्तार से समझाया। ''हाँ दादी! बिलकुल सही बताया, मौका पड़ने पर हम डोर के माध्यम से ही पतंग को नीचे उतारते हैं''– कुश ने कहकर समझदारी प्रदर्शित की।

''तीसरी बात, पतंग में दो पतली लकड़ियाँ जिसे काँप कहते हैं, लगी होती हैं। ऊपर की लकड़ी धनुषाकारा और बीच में सीधी। इसका मतलब यह कि जरूरत के समय विनम्र बनने या झुकने की क्षमता होना चाहिए और सीधी लकड़ी से यह सीख मिलती है कि हमेशा सतर्क और तैयार रहें''– दादी ने बताया। ''हाँ दादी।''– कुश ने हामी भरी।

''चौथी बात पतंग आसमान की ऊँचाई को स्पर्श

करने को बेताब होती है लेकिन उसको बीच के अवरोधों जैसे बिजली के तारों, ऊँचे भवनों और हवा के थपेड़ों से निबटना होता है। इसकी प्रकार जीवन संघर्ष के दौरान अनेक अवरोधों, मुश्किलों का सामना करना पड़ता है''– दादी ने आगे समझाया। ''जी दादी! पढ़ाई में भी हमें मुश्किलें मिलती हैं''– कुश ने उदाहरण दिया।

''पाँचवीं बात पतंग उड़ाना एक टीमवर्क है। पतंग

के साथ सही डोर, अनुकूल हवा और उड़ाने वाले के हाथों की कुशलता की जरूरत होती है। इसी प्रकार हमें भी जिंदगी में उड़ान भरने के लिए आसपास के कई लोगों की आवश्यकता होती है जैसे माता पिता, शिक्षकगण, दादा–दादी आदि जो समय–समय पर हमारा मार्गदर्शन कर सके इसलिए इन लोगों के प्रति मन में हमेशा कृतज्ञता का भाव बनाए रखना चाहिए''– दादी बोली। ''जी दादी! मैं रखता हूँ '' – कुश ने स्वीकारा।

''छठी बात, अगर पतंग क्षतिग्रस्त हो जाए, उसमें छेद हो जाए या डोर कमजोर पड़ जाए तो पतंग ठीक से नहीं उड़ सकती। उसी तरह हमारे संबंध दूसरों के साथ तभी अच्छे रह सकते हैं जब हमारा उनके साथ तालमेल दुरुस्त हो''– दादी ने बताया। ''हाँ दादी! इसलिए कई बार लोगों के साथ हमारी पटरी ठीक नहीं बैठ पाती– ''कुश ने स्वीकारा। ''सबके साथ संतुलन साधना बिठाना आसान नहीं होता पर कोशिश तो कर सकते हैं''– दादी ने सकारात्मक रास्ता दिखाया।

''सचमुच दादी! पतंग के माध्यम से आपने बहुत उपयोगी बातें बताई। अब तो आप समझ गई होंगी कि मैं क्यों आपको दादी महान कहकर पुकारता हूँ'' कुश ने हँसते हुए कहा दादी ने भी उसी अंदाज में सीख दी– ''लेकिन अगर तुम्हें महान दादी का महान पोता बनना है तो अपने में काफी कुछ सुधार लाना पड़ेगा।''

''ठीक है दादी! मैं यथासंभव प्रयास करुँगा आपका महान पोता बनने का, बस आप समय समय पर मेरे कान खींचती रहना''– कुश ने शरारती अंदाज में अपेक्षा व्यक्त की। तब तक एक पतंग कटकर उनकी छत पर आती दिखाई दी। दादी का इशारा पाते ही कुश तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

• इन्दौर (म.प्र.)

सही उत्तर : संस्कृति प्रश्नोत्तरी – विराध, अभिमन्यु, महाराज मनु, गोरखपुर, मुण्डक, यशोधर्मा, अश्विनी कुमार, रंगोबापू जी, जैसाण (जैललमेर), जेम्स हार्टजेल

पुराना फूलदान

चित्रकथा : देवांशु वत्स

बेपरवाह बच्ची

कहानी

पद्मिनी अबरोल

''ये देख लो रश्मि जी, इस बच्ची का हाल। मैंने तीन दिन पहले इसे अच्छे बच्चे की कॉपी फोटोस्टेट करवा के दी थी, मगर इसने इनका भी ये हाल कर दिया।'' मैंने कॉपी जाँचना बंद करके ऊपर नजर उठाई। सामने तनिष्क की बाँह पकड़े कनिका दीदी खड़ी थी। उनके चेहरे पर परेशानी के भाव के साथ उनके हाथों में बेतरतीब मुड़े–तुड़े कागज थे जिन्हें सीधा करके पढ़ना भी मुश्किल था, पर इसके ठीक विपरीत तनिष्का अपने दोनों घुटने इधर उधर हिलाती हुई बड़े आराम से अपनी स्कर्ट को हिलाये जा रही थी, उसके हाथों में छोटे–छोटे कुछ रबर के खिलौने थे, जिन्हें वह गोल–गोल घुमा रही थी। उसके चेहरे पर साफ लिखा था आपको जो करना है करो, मुझे कोई परवाह नहीं।

ठीक है। आज मैं ही इसके घर फोन करती हूँ, कहकर मैंने स्थिति को टाला। कक्षाध्यापिका होने के कारण सभी सहयोगी अध्यापिकाओं से उसकी शिकायतें सुन–सुनकर मैं स्वयं भी परेशान होने लगी थी। वास्तव में हर शिक्षक ने उसका लाया हुआ इतना सामान जब्त करके मुझे दे दिया था कि उसके लिए मुझे एक थैला ही बनाना पड़ गया था।

तनिष्का दूसरी कक्षा की छात्रा थी। उसकी गणवेश मैली–कुचैली रहती। पतली–दुबली सी वह अपने हम उम्र बच्चों में छोटी ही नजर आती थी। दूसरे दिन अपनी कक्षा में मैंने देखा कि वह दस मिनिट से टेबल के नीचे ही बैठी है, बाकी बच्चे प्रश्न उत्तर लिख रहे थे। पर वह मेरी आँख बचा कर कुछ मोती, एटीएम की पर्ची, छोटे–छोटे काँच के गोले आदि से खेल रही है। मैंने नाराज होकर सारा सामान ऊपर रखने को कहा। ''ये सामान अब मेरे पास रहेगा। चलो, अब कॉपी निकालो और लिखो,'' ये कहते कहते मैं उसका सामान समेटने लगी तो मैंने कनखियों देखा कि वह वही जो करना है कर रही वाला भाव लिए मुझे टुकुर–टुकुर देख रही है उसकी दृष्टि मानों कह रही थी कि मैं तो ऐसी ही हूँ, आपको बदलना हो तो बदल लो। उसके पास न कॉपी थी न पेंसिल और डायरी। उसके घर से बुलाने पर भी कोई नहीं आता था। अभिभावक बैठक में उसके नानाजी को पता चला कि उसकी माँ–पिता का तलाक हो गया है और माँ बीमार होने के कारण उसे नहीं देख पाती।

घर आकर भी मैं उसके बारे में सोचती रही। उसके घर से उम्मीद न होने पर अब मैंने स्वयं उसकी मदद करने का निर्णय लिया। अब मैंने हर समय उसकी हर गतिविधि को ध्यान से देखने का फैसला किया और उनके पीछे के कारणों को जानने परखने का प्रयास भी करने लगी। मैंने देखा कि वह हमेशा अपने में ही खोई रहती है। कक्षा में उसका कोई मित्र भी नहीं था इसलिए वह घर से तरह तरह की चीजें लाती ताकि साथी बच्चों का ध्यान अपनी ओर खींच सके। पर उसकी यह तरकीब बहुत कम समय के लिए काम करती थी, जल्दी ही बच्चे उससे दूर हो जाते। इसका कारण था हर अध्यापिका के आगे उसका गलत प्रभाव। उसका कोई भी काम कभी भी पूरा नहीं होता था। बच्चों ने बताया कि वह भोजनावकाश में खाने में टिफिन भी नहीं लाती थी बस कभी–कभार उसके पास १० रु होते थे। धीरे–धीरे मैंने होशियार बच्चे की मदद से उसका काम पूरा कराके उससे बात करके उसका दिल जीतने की कोशिश की। मुझे पता चला कि

उसकी पसंद का खाना राजमा चावल है। अगले दिन मैंने उसके लिए एक नया टिफिन खरीदा और उसमें राजमा चावल लाकर कक्षा में दिया तो उसके चेहरे पर खुशी देख कर मुझे संतुष्टि हुई। एक सुबह उसने बताया कि उसकी माँ नहीं रही। ये जान कर बिन माँ की उस छोटी सी जान के लिए मेरे मन में सहानुभूति का प्रवाह उमड़ पड़ा, और मैंने एक माँ की तरह उसका ध्यान रखने का स्वयं से वचन ले लिया। कुछ ही दिनों में ही उसमें पढ़ाई के प्रति सकारात्मक बदलाव था। पर मेरी खुशी बहुत देर तक नहीं रही। जल्द ही मुझे पता चला कि वह मेरा लाया टिफिन नहीं खाती, क्योंकि वह कभी कभी घर से भी टिफिन लाने लगी है। वह मेरे लाये टिफिन को देख कर कहती ''दीदी! मैं इतना खाना नहीं खा सकती। अब मुझसे खाया नहीं जाता और मुझे राजमा चावल अच्छे नहीं लगते।'' उसके कुछ न कहने से भी मैं जान गई कि उसके घर पर ही मना किया गया है। मुझे बहुत दुःख हुआ भी कि क्यों एक शिक्षिका, माँ की तरह खाना नहीं खिला सकती? पर मुझे इतनी खुशी थी कि मैं उसका मन पढाई में तो लगा ही सकी।

● नईदिल्ली

॥ स्तंभ ॥ स्वयं बनें वैज्ञानिक :

गाने वाला गिलास

आलेख — डॉ. राजीव तांबे
अनुवाद — सुरेश कुलकर्णी

आज हम एक नया प्रयोग करते हैं। गिलास गाता है यह आपको बताते हैं। चलो, इसके लिए सामग्री क्या लगेगी यह देख लीजिए।

मोटे कागज या मोटे प्लास्टिक से बना गिलास

सेफ्टी पिन

मोटा धागा (करीब ४० सें. मी. लम्बा)

तो फिर हो जाइए शुरु अपना गिलास बनाने के लिए।

सर्वप्रथम सेफ्टी पिन की सहायता से पेपर गिलास के निचले हिस्से में एक छोटा छेद कर उसमें धागा डाल दीजिए। अब उस धागे को अंदर से एक गठान लगा दो। इससे गिलास के बाहर धागा लटकता रहेगा।

अब एक हाथ में गिलास को मजबूती से पकड़ो और दूसरे हाथ से धागे को अंगूठे के नाखून से ऊपर नीचे कीजिए।

क्या हो रहा है?

गिलास गाना गाने लगा। बिलकुल सच है। यह नाखून और धागे को खींचने का क्रम कम ज्यादा करे तो अपने आप गिलास के गाने के सुर बदलते है। इसलिए तो इस प्रयोग को कहते है गाने वाला गिलास।

यह क्यों होता है? चलिए, यह भी हमेशा की तरह बताकर आपकी पहेली सुलझा देते हैं।

नाखून धागे पर घीसने के कारण कंपन निर्मित होता है और वह धागे के दूसरे सिरे में अर्थात गिलास में पहुँचते हैं, इस कारण हवा का दबाव परिवर्तित होता है और वह कंपन गिलास के अंदर की गोलाकार दीवार पर बार बार टकराती है इससे कंपन नाद में बदल जाता है और आवाज आती है। इसको अनुनाद भी कहा जाता है। आपको याद होगा कि बड़े-बड़े गायक सितार, तानपुरा या इकतारी ये सब इसी संकल्पना पर आधारित है। इन सभी वाद्यों में हवा के कंपनों को परिवर्तित कर निनाद परिवर्तित किया जाता है।

अब आप एक काम कीजिए। हमने जो धागा इस्तेमाल किया है, उसका आकार या लम्बाई कम ज्यादा करके देखे कि क्या होता है? आवाज की कंपनों में कमी आती है या गाना सुरीला बनता है? आप इस बारे में हमें लिखना न भूलना प्यारे मित्रो! हमें हमेशा की तरह आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी।

● पुणे (महा.)

बच्चे हिन्दुस्थान के

कविता

डॉ. मधुसूदन साहा

हम भारत के भरत सरीखे
बच्चे हिन्दुस्थान के।

भगतसिंह से हमने सीखी
संघर्षों की नई कहानी,
सदा राष्ट्र के लिए सुरक्षा
माँगा करती है कुर्बानी,
इतिहासों के पृष्ठ पृष्ठ पर
किस्से हैं बलिदान के।

हमें सिखाया है प्रताप ने
कभी न सिर को झुकने देना,
बढ़ते हुए कदम को पथ पर
कहीं न पल भर रुकने देना,
हम तो सदा झुकाते आये
सिर आँधी-तूफान के।

राम, कृष्ण, गौतम, गाँधी ने
सच्चाई का पाठ पढाया।
अंधियारे को दूर भगाकर
जीवन में उजियारा लाया,
भुला न पायेंगे पल भर भी
गुण ऐसे गुणवान के।

बुरी भावना से सीमा पर
जो उत्पात मचाते हरदम,
उनकी बुरी सोच को करते
हर हालत में हम नाकोदम,
हम अनुयायी हैं सदियों से
गीता और पुराण के।

• राउरकेला (उड़ीसा)

आधे द्वीपों के देश

आलेख
श्रीधर बर्वे

पापुआ–न्यूगिनी –

ऑस्ट्रेलिया के उत्तर में विश्व का दूसरा बड़ा द्वीप न्यूगिनी स्थित है। इस द्वीप का पश्चिमी भाग ''इरियन जया'' के नाम से इण्डोनेसिया का अंग है। इसी द्वीप का पूर्वी भाग ''पापुआ–न्यूगिनी'' के नाम से एक स्वतंत्र देश है। यह देश १६ सितम्बर १९७५ को स्वतंत्र हुआ।

क्षेत्रफल : ४६२८४० वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या : लगभग ७० लाख
राजधानी : पोर्ट मोर्सबी

पूर्वी तिमोर –

इण्डोनेसिया के द्वीप समूह के द्वीपों में एक है ''तिमोर''। इस द्वीप का पश्चिमी भाग इण्डोनेसिया का भाग है। पूर्वी भाग २० मई, २००२ से एक आजाद देश है।

क्षेत्रफल : १४८७४ वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या : लगभग ११ लाख ५० हजार
राजधानी : दिली

ब्रुनई –

बोर्नियो दुनिया का तीसरा बड़ा द्वीप है इस द्वीप का दक्षिणी भाग इण्डोनेसिया में कालीमंतन प्रदेश के रूप में सम्मिलित है। बोर्नियो के उत्तर के दो भाग सारावाक और सबाह मलयेसिया में शामिल है। बोर्नियो द्वीप का आधा तो नहीं केवल ०.७१ प्रतिशत भूभाग ब्रुनई नाम से स्वतंत्र देश है। यह एक सुलतानी राज्य है, जो पहली जनवरी १९८४ को स्वतंत्र देश बना।

क्षेत्रफल : ५७६५ वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या : चार लाख
राजधानी : बंदर सिरी बेगवान

आयरलैण्ड –

''ब्रिटेन के पश्चिम में आयरलैण्ड द्वीप स्थित है। आयरलैण्ड का उत्तरी भाग ब्रिटेन के साथ युनाइटेड किंगडम का उत्तरी भाग के रूप में सम्मिलित है। उत्तरी आयरलैण्ड को अल्सटर भी कहा जाता है।

दक्षिणी भाग ६ दिसम्बर १९२१ को ब्रिटेन की पराधीनता से मुक्त हुआ। यही दक्षिणी भाग आयरलैण्ड के नाम से स्वतंत्र देश है।

क्षेत्रफल : ७०२८२ वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या : ४५ लाख
राजधानी : डबलिन

हिस्पैनियोला द्वीप –

यह द्वीप कैरीबियन सागर का दूसरा बड़ा द्वीप है। राजनीतिक रूप से यह दो स्वतंत्र देशों में बँटा हुआ है। पूर्वी भाग में ''डोमिनिकन रिपब्लिक'' स्थित है, यह देश पहले स्पैन के अधीन था और २७ फरवरी, १८४४ को स्वतंत्र हुआ। पश्चिमी भाग में ''हैटी'' नामक देश है, जो १८०४ तक फ्रांस के अधिपत्य में था, १८०४ में ही पहली जनवरी को हैटी आजाद हुआ।

देश :	डामिनिकलन रिपबिल्क
क्षेत्रफल :	४८४४२
जनसंख्या :	१ करोड़ २ लाख
राजधानी :	सैन्तो दोमिंगो

देश :	हैटी
क्षेत्रफल :	२७७५०
जनसंख्या :	१ करोड़ पाँच लाख
राजधानी :	पोर्ट-औ-प्रिंस

सायप्रस -

भूमध्य सागर में तुर्की के दक्षिण में सायप्रस द्वीप स्थित है। नौ हजार दो सौ इक्यावन वर्ग किलोमीटर भूमि के इस द्वीप की लगभग नौ लाख जनसंख्या है। १९६० में १६ अगस्त को स्वतंत्र होने के पूर्व इस पर अंग्रेजों का राज्य हुआ करता था।

आजादी के पूर्व और बाद से सायप्रस साम्प्रदायिक और भाषागत संघर्ष का शिकार रहा है। भौगोलिक रूप से तुर्की के निकट होने के कारण द्वीप के अल्पसंख्यक तुर्की भाषी इस्लाम अनुयायी इसे तुर्की में विलीन करना चाहते हैं जबकि बहुसंख्यक ग्रीक भाषा भाषी ईसाई जनपृथक स्वतंत्र सायप्रस चाहते हैं।

१९७४ में सायप्रस पर आक्रमण उसके ४० प्रतिशत भूभाग पर 'तुर्क' सायप्रस राज्य स्थापित कर दिया है। तुर्क सायप्रस को तुर्की के अतिरिक्त अन्य किसी देश ने स्वीकृति और मान्यता नहीं दी है।

दोनों सम्प्रदायों के तीव्र मतभेदों के रहते हुए विभाजन बना हुआ है। दोनो भागों की एकता भविष्य के गर्भ में है।

● इन्दौर (म.प्र.)

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

राजू के बारे में मोहन ने अपने शिक्षक से कहा- "यह मेरी एकमात्र मौसी की बहन की ननद के पिता का पोता है।" राजू और मोहन आपस में क्या होंगे?

(उत्तर इसी अंक में)

मोहिते मामा

पुरन्दर का दुर्ग बाजी देशपांडे के सुरक्षित हाथों में था। शिवाजी का शासन कढे के मैदानी क्षेत्र पर सुनियोजितरूप से चल रहा था। किन्तु फिर भी वे सन्तुष्ट नहीं थे। क्योंकि सूपे का उप मण्डल अभी स्वराज्य में मिलाया जाना था। जब तक यह नहीं हो पाता शिवाजी के राज्य को पूर्व से खतरा बना रहता, ऐसी सम्भावना थी। अतः सूपे का अत्याधिक महत्व था।

दुर्भांषय सूपे के दुर्ग को जीतना टेढ़ा काम था। इसलिए नहीं कि शिवाजी के साहस या बाहुबल में कुछ कमी थी। मात्र इसलिए कि उस दुर्ग का दुर्गपाल था शम्भाजी मोहिते जो शिवाजी की सौतेली माता तुकाबाई साहिबा के भाई यानी शिवाजी के मामा थे। शिवाजी बड़ी उलझन में थे कि क्या और कैसे करें। अन्ततः उन्होंने एक योजना बना डाली और एक दूत शम्भा जी मोहिते के पास भेजा।

दूत को संदेह था कि मामाजी आसानी से दुर्ग देने पर राजी हो सकेंगे।

*****

''कहो भाई! तुम्हारे महाराज के क्या हाल चाल है'', मोहिते मामा ने व्यंग के स्वर में पूछा।

''श्रीमान! मैं शिवाजी महाराज का एक निवेदन सेवा में प्रस्तुत करने आया हूँ।''

''क्या कहने आये हो?''

''यही कि आप महाराज के स्वराज्य स्थापना कार्य में उनको सहायता करें।''

''हुम्म? और इस सहयोग के बदले मैं अपनी जान गँवा दूँ, यही न चाहते हो तुम। भाई! यह मेरे बस का नहीं है।''

''मामा जी! आप विचार तो कीजिए। प्रत्येक देशभक्त भारतीय का कर्तव्य है कि वह इस शुभ काम में हाथ बटाये। यह तो धर्म की रक्षा होगी। देश की सेवा होगी जन कल्याण होगा मामाजी।''

''देखो भाई धर्म को और भगवान को इससे अलग रखो और जनता गयी भाड़ में। चैन से दानापानी मिल रहा है उसे मैं जोखिम में नहीं डालूंगा। अगर बादशाह कुपित हो गया तो मेरा सिर कंधों पर नहीं रहेगा। तब कोई मेरी मदद को नहीं आयेगा।''

''ना भाई ना तुम्हारी नजर सूपे पर है। मैं अपना किला नहीं दूंगा, हरगिज नहीं दूंगा।''

''मामाजी! किलेदार तो आप ही रहेंगे और तब बादशाह के नहीं अपने देश के अनुगत होंगे यह तो शुभ कार्य है श्रीमन्।''

''मैंने ना कह दी सो कह दी। मैं कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता हूँ।''

*****

दूत की बात सुनकर शिवाजी धीरे से मुस्कुराए और विचारमग्न हो गए। दो दिन बाद उन्होंने अपने विश्वस्त सेनानायक क्षामराज पंत को बुलाया और अश्ववाहिनी तैयार करने का आदेश दे दिया।

शाम होते होते ३५० अश्वारोही अस्त्र-शस्त्र से सुज्जित पद्मावती महल के सामने एकत्र हो गए।

आगे-आगे शिवाजी और पीछे अश्वारोही पहाड़ी से उतर कर सूपे की ओर चल दिए। उन्होंने अपनी योजना अपने निकटस्थ कुछ नायकों को समझा दी।

कुछ मावले किले के पास पहुँचे और द्वाररक्षक को नमस्कार करके बोले, ''मोहित जी ने हमें बुलाया था। दीपावली का इनाम देने को कहा था।''

''तुम पागल हो। दीपावली अभी १२ दिन दूर है।''

''वह तो ठीक है मगर हमारे पास खाने को अन्न नहीं है सो हमने प्रार्थना की थी कि दीपावली का इनाम वे हमें पहले ही दे दें।''

''अच्छा भाई! तो चले जाओ।''

किले का छोटा फाटक खुल गया और ५-६ मावली अन्दर चले गए। तब तक शिवाजी भी फाटक के पास तक आ गए थे। मावलियों ने अन्दर जाकर बड़ा फाटक खोल दिया। द्वाररक्षकों ने आपत्ति की तो उन्हें धमका कर चुप कर दिया गया।

महल में मोहिते मामा हुक्का पी रहे थे। भीड़ देखकर समझ गए। बोले- ''शिवा! तूने मेरे साथ दगा किया है रे।''

''नहीं मामाजी मैं स्वराज्य स्थापना के हेतु आपका आशीर्वाद लेने आया हूँ।''

''तू मुझे मारने आया है न मार डाल।''

''नहीं मामाजी! मारे जाने योग्य जो लोग हैं उन्हें मैं मार ही रहा हूँ। आप तो पूज्य है मेरे पिता के समान है।''

''मामा जी मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मेरा अभियान पूरा हो। मेरी इच्छा अपने देश को मुसलमानी शासन से मुक्त कराना ही है ताकि सभी को पूजा अर्चना की स्वतंत्रता मिले। माँ बहिनों की स्वतंत्रता मिले। माँ बहिनों का सम्मान सुरक्षित रहे। हमारी सबकी पीठ पर माँ अम्बिका और भगवान का हाथ है।''

मोहिते ने तब शिवाजी की महानता समझी। बोले, बेटे मेरा आशीष तेरे साथ है। तुझे सूपे दुर्ग चाहिए सो तेरा ही है। संभाल ले।''

''मामाजी! आप रायगढ़ चलें और वहीं रहे ताकि आपकी सेवा का अवसर भी शिवा को मिल जाये।''

''नहीं, मैं कर्नाटक चला जाऊँगा। तेरे शुभ कार्य में जो बाधा है वह समाप्त हो जायेगी।''

और मोहिते मामा को शिवाजी महाराज ने बड़ी भाव-भीनी बिदाई दी।

●

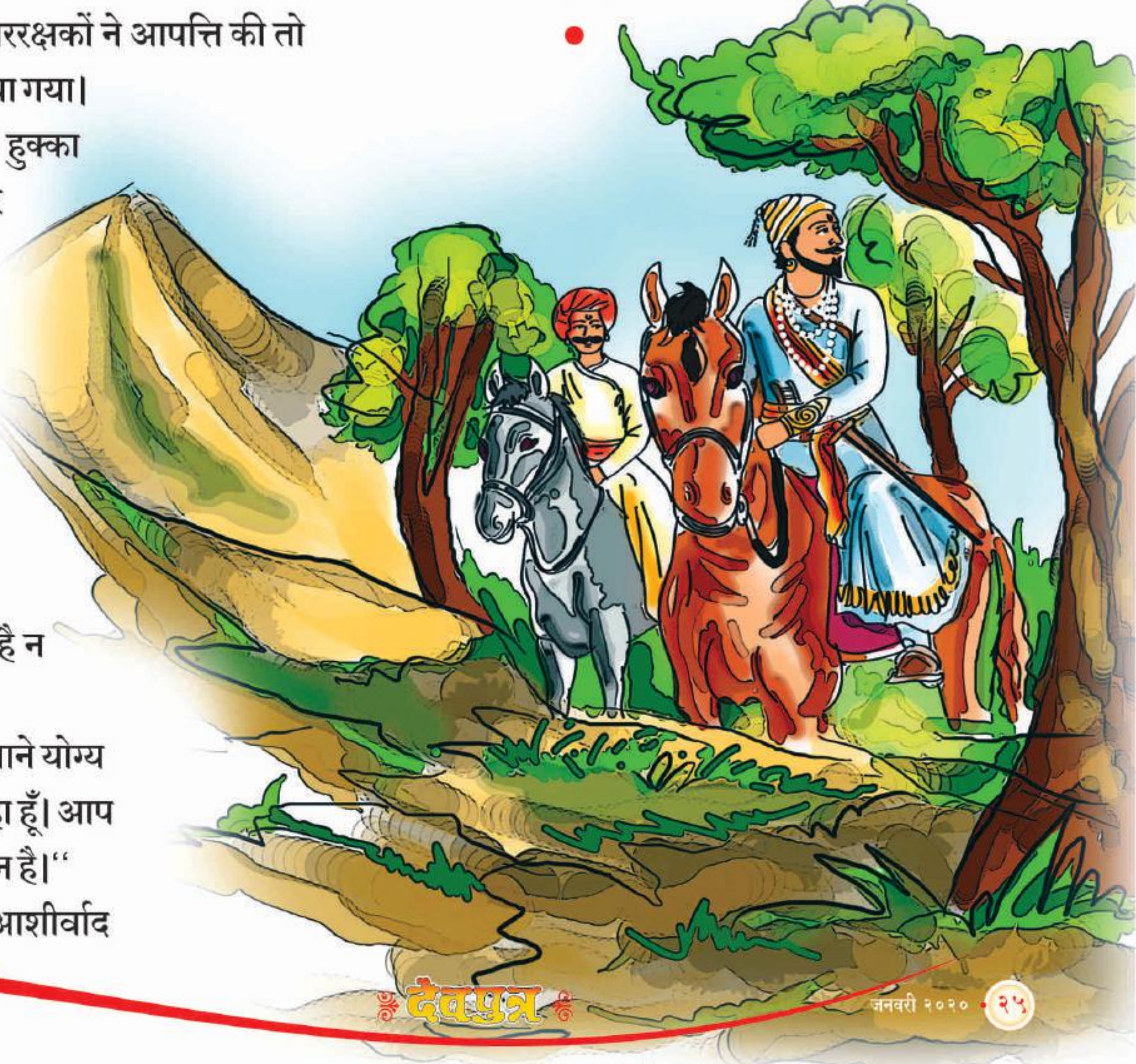

अमूल्य निधि

कहानी

सुकीर्ति भटनागर

छुट्टी का दिन होने के कारण उस दिन शान और सिमर थोड़ी देर से ही सो कर उठे। देखा तो सामने बबली बुआ बैठी है ''बुआ जी! आप, इतनी सुबह-सुबह...'' बच्चे हैरान थे। ''हाँ, क्या है न कि रात को जब मैं लगभग बारह-साढ़े बारह के करीब घर पहुँची तो देखा तुम लोग सो रहे हो, इसलिए जगाया नहीं,'' बुआ ने प्यार से उन्हें गले लगाते हुए कहा।

कुछ ही देर में जब घर के सभी सदस्य नाश्ता करने बैठे तो बड़ों की बातें सुनते हुए उन्हें समझ में आया कि बुआ जी बीमार हैं और अपने इलाज के लिए यहाँ आई हैं। यह जानकारी उन्हें उदास कर देने वाली थी क्योंकि वे अपनी बुआ से बहुत प्यार करते थे और वह भी उन पर वारी-वारी जाती थीं। वैसे भी पिता जी की सबसे छोटी बहन होने के कारण वह सभी की दुलारी थीं। दोनों बच्चों के साथ तो उनकी खूब पटती थी। पर अब जब वह बीमार हैं तो क्या पहले की तरह उनके साथ तरह-तरह के खेल खेल पाएंगी या उन्हें लेकर कहीं घूमने जाएँगी? भरी आँखों से एक दूसरे की ओर देखते हुए उन्होंने सोचा। तभी शान ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, ''पहले से कितनी मोटी और सुस्त हो गई हैं न बुआ।'' ''हाँ और पीली-पीली सी भी। पहले कितना गोरा और गुलाबी रंग होता था न उनका,'' सिमर भी मुँह लटका कर बोला। पर हुआ क्या है उनको, दोनों गहरी सोच में थे और अकारण ही बुआ को लेकर बीमारियों की लम्बी सूची के भंवर जाल में उलझ गए थे। कहीं यह, कहीं वह, कहीं वैसा तो नहीं हो रहा उनके साथ। पर जब उनका नन्हा सा दिमाग सोचते-सोचते थक गया तो भगवान से उनके स्वास्थ और लम्बी आयु की कामना करते हुए वे सामने पलंग पर अटैची का सारा सामान फैलाए अपनी बुआ के पास जा बैठे, जो उन सबके लिए कोई न कोई उपहार लाईं थीं।

अगले दिन जब वे विद्यालय से लौटे तो बुआ जी को घर पर न देखकर माँ से उनके बारे में पूछने लगे। ''वह अस्पताल गई है बस आती ही होंगी।'' ''पर माँ, उन्हें हुआ क्या है? शान ने पूछा। ''यह तो डॉक्टर ही बतायेगा बेटा! वैसे वह कर रही थी कि चलने से सांस बहुत फूलती है, थकावट के साथ-साथ ब्लडप्रेशर भी बढ़ने लगता है और इसी उम्र में आँखें भी कमजोर हो गई हैं, मोटापा बढ़ रहा है सो अलग'', माँ अपनी ही धुन में बोलती चली जा रही थीं। तभी बबली बुआ पिताजी के साथ अस्पताल से लौट आईं। ''क्या कहा डाक्टर ने'', चाय का पतीला गैस पर रखते हुए माँ ने पूछा। ''कहना क्या था, बस यही कि लम्बी सैर करो, तली भुनी और मीठी चीजों से परहेज करो। कुछ योग आसन भी बता दिए हैं। अब अच्छा खाओ-पिओ नहीं तो जीने का क्या लाभ। कहता था मोटापा कम करो। वजन नियंत्रित होने से बाकी की तकलीफें भी धीरे-धीरे ठीक हो जाएंगी, अन्यथा अन्य कई गंभीर बीमारियां भी हो सकती हैं। इतना तो हम सब भी जानते हैं न भाभी, फिर डॉक्टर के पास जाने का क्या लाभ। बेकार में ही पाँच सौ रुपए ले लिए और दो तरह की दवा थमा दी।'' धम्म से सोफे पर बैठते हुए बुआ उत्तेजित होकर बोलीं। ''देखो बबली! केवल जानने और समझने से कुछ नहीं होता जब तक कि समझी गई बात पर अमल न किया जाए। अच्छा तो अब यह बताओ कि चाय फीकी पियोगी या मीठी?'' माँ बोली ''जो ठीक लगे बना दो भाभी!'' रुआंसी हो आई बुआ ने कहा। ''यही ठीक रहेगा, क्योंकि स्वस्थ रहने के लिए खान-पान में थोड़ा नियंत्रण तो रखना ही पड़ेगा,'' शांत स्वर में शान और नितिन की माँ ने कहा तो बुआ बिना कुछ बोले बिनामन से चाय सुड़कती रहीं।

अगली सुबह जब बच्चे विद्यालय जाने के लिए तैयार होने लगे तो देखा बुआ जी अभी तक लम्बी तान कर सो रही है। ''अरे सुबह के सात बजने वाले हैं और बुआ जी... '' तभी उनके मन के भावों को पढ़ते हुए उनके

पिताजी बोले, ''सुबह पाँच बजे से तीन बार जगाने की कोशिश कर चुका हूँ, पर इसके तो कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। मैं अच्छी तरह से जानता हूँ इसकी आदतें महाआलसी है यह ऐसे में कर चुकी सैर और व्यायाम।'' दोनों बच्चों को बुआ जी के लिए कही गई बात अच्छी तो नहीं लगी पर सच तो सच ही था। धीरे–धीरे वे यह भी जान चुके थे कि सुस्ती की मारी बुआ जी चटोरी भी बहुत हैं, क्योंकि रात के सन्नाटे में बच्चों ने उन्हें रसोई घर में जाकर बहुत कुछ खाते हुए भी देखा था। तब वे चिढ़ कर एक दूसरे से कहते ''इसलिए तो इतनी मोटी और निठल्ली हैं। पर कुछ समझती ही नहीं वह।'' उन्हें आए लगभग पन्द्रह दिन हो गए थे पर अब तक उनकी दिनचर्या में विशेष परिवर्तन नहीं आया था। बच्चों के पिता जी ने तो गुस्से में उन्हें कुछ भी कहना सुनना छोड़ दिया था पर माँ यथावत अपना कर्त्तव्य निभा रही थीं। वह उन्हें हर सुबह खाली पेट नींबू–शहद मिला पानी देती, सूप, फल, अंकुरित दालें और कम घी तेल वाला भोजन देती और जब तब शारीरिक व्यायाम के लिए भी कहती रहतीं। पर बुआ जी की स्थिति तो ढाक के तीन पात जैसी थी। वैसे भी भारी थुलथुल शरीर होने के कारण तनिक सा भी उछलती–कूदती तो निढाल होकर बिस्तर पर लुढ़क जातीं। ऐसा कब तक चलेगा? कोई न कोई कारगर उपाय तो ढूंढना ही पड़ेगा।'' दोनों भाई अपनी बुआ जी के प्रति चिन्ता व्यक्त करते हुए इस समस्या का हल ढूंढने में लग गए।

उस शाम जब बुआ जी टी.वी. पर कोई फिल्म देख रही थीं कि तभी साथ वाले कमरे में कुछ आवाजें सुन वहाँ जा पहुंची। देखा तो दोनों भाई कम्प्यूटर पर एरोबिक व्यायाम देखते हुए स्वयं भी उसी के अनुसार व्यायाम करने में लगे हैं।'' ''यह क्या कर रहे हो तुम लोग।'' ''देख तो रही हैं आप, कसरत कर रहे हैं। सुबह तो विद्यालय जाने के चक्कर में इतना सा भी समय नहीं मिलता कि सैर कर सकें या फिर थोड़ा व्यायाम ही कर लें। उसके बाद तो फिर सारा दिन पढ़ाई ही पढ़ाई। इसलिए सोचा कि शाम को ही थोड़ा शरीर को हिला डुला लें। यह बात तो आप भी जानती ही होंगी कि नियमित व्यायाम करने से तन और मन दोनों ही स्वस्थ रहते हैं। छुट्टियों में तो सुबह की सैर भी शुरु कर देंगे हम।'' ''पर कितना कठिन है न, यह सब करना।'' ''सो तो है, पर जब मन में कुछ करने की बात सोच ली जाती है बबली, तो कुछ भी कठिन नहीं लगता, क्योंकि दृढ़ निश्चय ही हमें शक्ति प्रदान करता है, ''पीछे आ खड़ी हुई बच्चों की माँ ने उनसे कहा तो कुछ क्षण वह चुप खड़ी रहीं, फिर बिना

कुछ कहे–सुने वहाँ से चली गईं।

अब जब भी दोनों बच्चे शाम को कम्प्यूटर के सामने खड़े हो कर व्यायाम करते तो बुआ जी भी उनके सामने जा बैठतीं और प्रशिक्षकों को व्यायाम सिखाते देखती रहतीं। उस समय उन्हें देख उनके मन में अक्सर यह विचार आता कि काश! उनका शरीर भी उन जैसा ही स्वस्थ और सुडौल होता। काश! उनकी भी बड़ी–बड़ी सुन्दर आँखों पर चश्मा न चढ़ा होता, पर कैसे? धीरे–धीरे यह 'कैसे' शब्द उनके मन–मस्तिष्क पर हावी होता चला गया। परिणामस्वरूप एक दिन वह भी बच्चों की देखा–देखी हाथ–पैर हिलाने लगीं। उन्हें ऐसा करते देख बच्चों की माँ ने कहा भी, ''तुम तो बस रहने ही दो बबली, कहीं कोई हड्डी पसली टूट गई तो लेने के देने पड़ जाएँगे।'' ''ऐसा कैसे, अरे जब बच्चे यह सब कर सकते हैं तो फिर में क्यों नहीं, ''बुआ जी हाँफते हुए कहा। अब तक वह पसीने–पसीने हो गई थीं, सांस भी फूलने लगी थी और हाथ–पैर दुखने लगे थे, पर वह कसरत करती ही रहती और यह क्रम आगे भी चलता रहा।

कुछ तो संतुलित आहार के आधार पर और कुछ शारीरिक श्रम द्वारा बुआ जी की शारीरिक रूप रेखा में परिवर्तन आने लगा। उनकी सांस भी अब कम फूलती थी और बी.पी. भी नियंत्रित रहने लगा था। अब वह स्वयं को हल्का फुल्का और ऊर्जा से भरा महसूस करने लगी थीं। ये सकारात्मक परिणाम उन्हें नये उत्साह से भरने लगे। फलस्वरूप वह अपने स्वास्थ्य के प्रति और अधिक सजग हो गईं, क्योंकि अब वह भली प्रकार समझ गई थीं कि अच्छा स्वास्थ्य ही मनुष्य की अमूल्य निधि है। फिर एक सुबह कुछ ऐसा हुआ जिसने सबको अचम्भित कर दिया। बुआ जी ट्रैकसूट और जूते–मोजे पहन कर अपने कमरे से बाहर निकल रही थीं। ''भाई नितिन, आज सुबह–सुबह इन महारानी जी की सवारी कहाँ को जा रही है'' गाल पर उंगली टिकाए बुआ जी की ओर देखते हुए शान ने पूछा। ''सैर के लिए जा रही हूँ, मेरे नटखट बबुआ! आँखों पर चढ़ा यह मोटा चश्मा नहीं उतारना क्या?'' बुआ ने हँसते हुए कहा और तेज कदमों से चलती हुई बाहर निकल गईं। यह देख बच्चे तो खुश हुए ही क्योंकि बुआ जी को व्यायाम से जोड़ने वाली उनकी योजना रंग ला रही थी, साथ ही उनके माता–पिता भी उनमें आए इस परिवर्तन को देख संतुष्ट थे, क्योंकि उनके द्वारा किया गया यह प्रयास उनकी निजी सोच पर आधारित था जबरदस्ती पर नहीं।

• पटियाला (पंजाब)

।। बाल प्रस्तुति ।।

विवेकानंद

कविता

अनीता सेठिया

जन्म अठारह सौ तिरसठ की बारह जनवरी को पाया।
विश्वनाथ दत्त जी के घर बेटा बनकर वह आया।।
माता भुवनेश्वरी देवी थी नाम नरेन्द्र धराया।
परमहंस श्रीरामकृष्ण को अपना गुरु बनाया।।
ऊँचे कुल में जन्मा फिर भी छुआ नहीं अभिमान।
लाल मिला यह भारत माँ को बनकर पुत्र महान।
भोग विलास न जिसको भाया सेवा का व्रत धारा।
संन्यासी योगी बन जिसने जीवन पूर्ण गुजारा।।
भारत, भारत के जन के उत्थान को लक्ष्य बनाया।।
घूम घूम कर देश-विदेश में संस्कृति ध्वज फहराया।।
दीन हीन जन की सेवा को जिसने पूजा माना।
उसे विवेकानंद नाम से सारे जग ने जाना।।
चार जुलाई सन् उन्नीस सौ दो को स्वर्ग सिधारे।
चालीस वर्ष से कम वय में थे जग के बने सितारे।।
सोया भारत पुनः जगाया स्वाभिमान लहराया।
जगत गुरु भारत के सुत को सबने शीश नमाया।।

• खजूरीगौड़ (म.प्र.)

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

चिनार

जम्मू कश्मीर का राज्य वृक्ष

• डॉ. परशुराम शुक्ल

हिम पर्वत का वृक्ष अनोखा,
भारत में मिल जाता।
पाक और यूनान आदि से,
इसका अभिनव नाता,
काली गीली कुछ रेतीली,
मिट्टी इसको भाती।
छाल अविकसित पतली इसकी,
पपड़ी बन झर जाती,
मई-जून में सभी डालियाँ,
फूलों से भर जातीं।
दाँतों वाली हरी पत्तियाँ,
सबके मन को भातीं।
अंग सभी उपयोगी इसके,
देशी दवा बनाते।
आँव, दस्त बदहजमी सबको,
जड़ से दूर भगाते।
लेकिन सुन्दरता के कारण,
ख्याति निराली पायी।
अमरीका तक जाकर इसने,
अपनी धाक जमायी।

• भोपाल (म.प्र.)

अच्छी सेहत का क्या मतलब है?

सचित्र विज्ञान चर्चा–
संकेत गोस्वामी

अच्छा स्वास्थ्य यानी अच्छी सेहत, सही पौष्टिक भोजन, उचित व्यायाम और संतुलित आराम के जरिए हासिल किया जाता है। इन विषयों पर गड़बड़ी बीमार कर देती है। व्यायाम यानी दौड़ना, साइकिल चलाना या पैदल चलना मजबूत मांसपेशियों को विकसित करने के लिए सर्वोत्तम है और ये हृदय को भी मजबूती देने में समर्थ है।

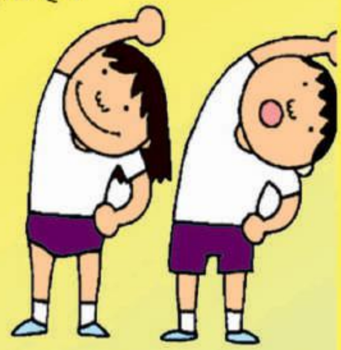

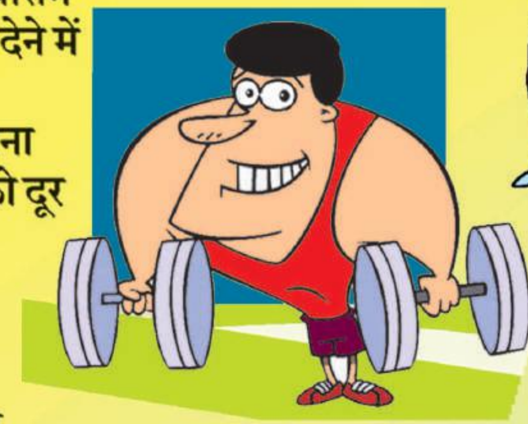

वयस्कों के लिए तो ऐसा करना बढ़ती उम्र के मद्देनजर रोगों को दूर रखने के लिए महत्वपूर्ण भी है।

लोग जानते हैं कि कम सोना भी सेहत पर बुरा असर डालता है। हालांकि बच्चे सामान्यतया वयस्कों, युवाओं और बुजुर्गों से ज्यादा सोते हैं पर यही बात थोड़ा बड़ा होने पर उन्हें चंचल बनाए रखने में भी मदद करती है। संतुलित गहरी और चिंतारहित नींद सेहत को बनाती है।

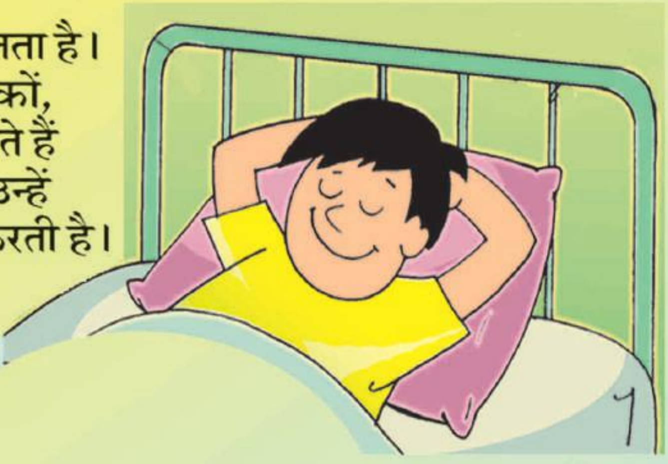

अधिकतर लोग स्वाद के चक्कर में ज्यादा खाते हैं या कच्चा या अधिक भुना या वसायुक्त या रखा हुआ भोजन, खाने की चीजें भी खा लेते हैं। ताजा भोजन सेहत अच्छी रखने के लिए बेहद जरूरी है। जिन्हें अपनी सेहत अच्छी रखनी होती है वे फल और सब्जियों को अधिकाधिक खाते हैं। बहुत अधिक पकी या देर तक रखी चीजों के तो स्वाभाविक गुण नष्ट होने लगते हैं।

पूरे विश्व में अन्य देशों के मुकाबले **जापान** में अधिक आयु के लोग मौजूद हैं। वे पश्चिमी देशों के मुकाबले अलग किस्म का भोजन लेते हैं। जहां अधिक उम्र के लोग मौजूद हैं वहां पर सादा ताजा भोजन खाया जाता है। वे ऐसा भोजन लेते हैं जिनमें विटामिन, प्रोटीन बहुत होता है और वसा यानी फैट कम से कम।

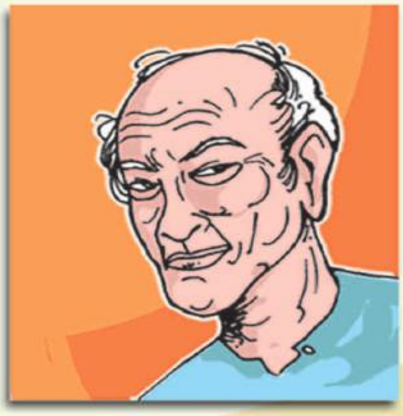

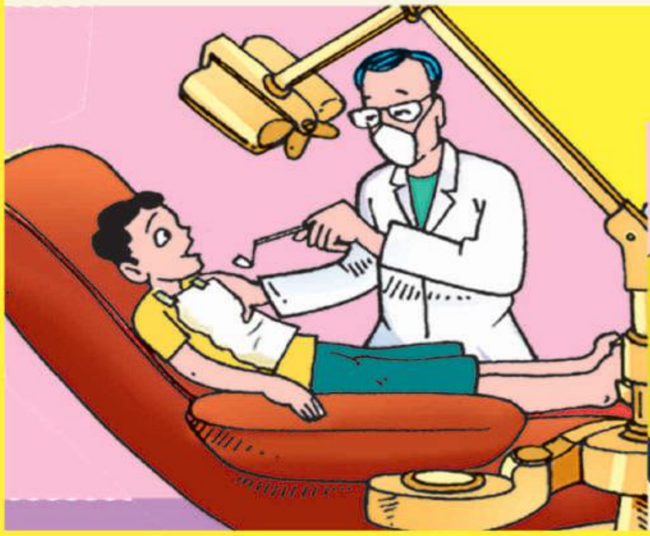

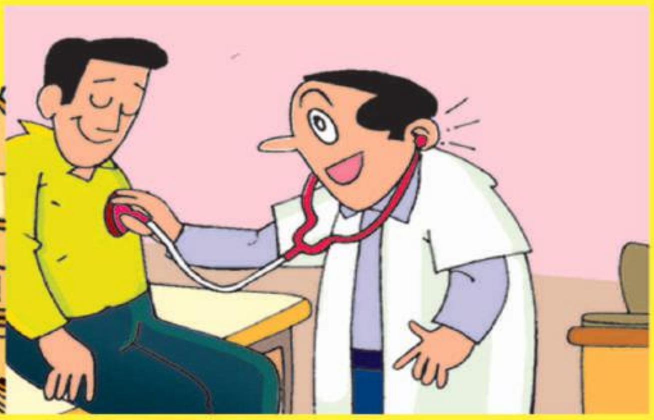

अच्छा और स्वस्थ महसूस करने पर भी नियमित डॉक्टरी जांच करवाते रहना चाहिए। अक्सर शारीरिक दिक्कतें शुरुआती रूप से छोटे लक्षणों से प्रकट होती हैं, फिर उनका विकृत रूप सामने आ सकता है। आंखों और दांतों की जांच तो अन्य अंगों से भी ज्यादा जरूरी माननी चाहिए।

समाप्त

अन्न बचत

कविता

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

अन्न बचाओ, अन्न बचाओ,
अन्न बचाओ जी।

हो बस जितनी भूख कि बस...
उतनी ही भरना थाली।
अन्न फेंकना बुरी बात है,
पटे न इससे नाली।
हाँ, बस उतना ही लो, जितना
तुम खा पाओ जी।

कितना श्रम करते किसान हैं,
तब फसलें इठलातीं।
खेतों में यह अन्न उगाना,
सहज नहीं बतलातीं।
एक-एक दाने का दिल से
मोल लगाओ जी।

अन्न हमारा जीवन धन है,
खूब समझ लो भाई।
सबको मिले पेट भर भोजन,
रहे सदा भरपाई।
अन्न बचत का गीत चलो,
सब मिलकर गाओ जी।

• शाहाजहाँपुर (उ.प्र.)

चित्र बनाओ

• राजेश गुजर

बच्चो, चूहे का चित्र

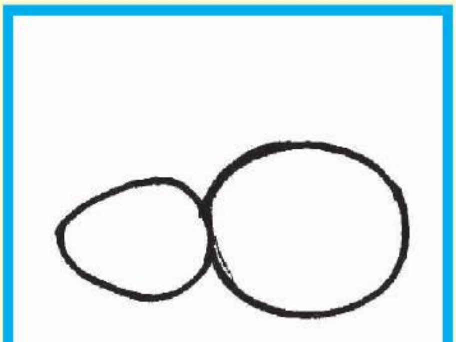

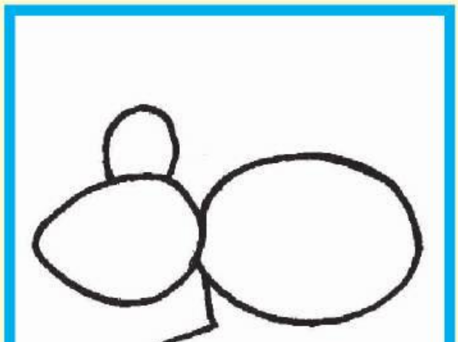

कुचुर-कुचुर खा लो

कविता

रावेन्द्र कुमार 'रवि'

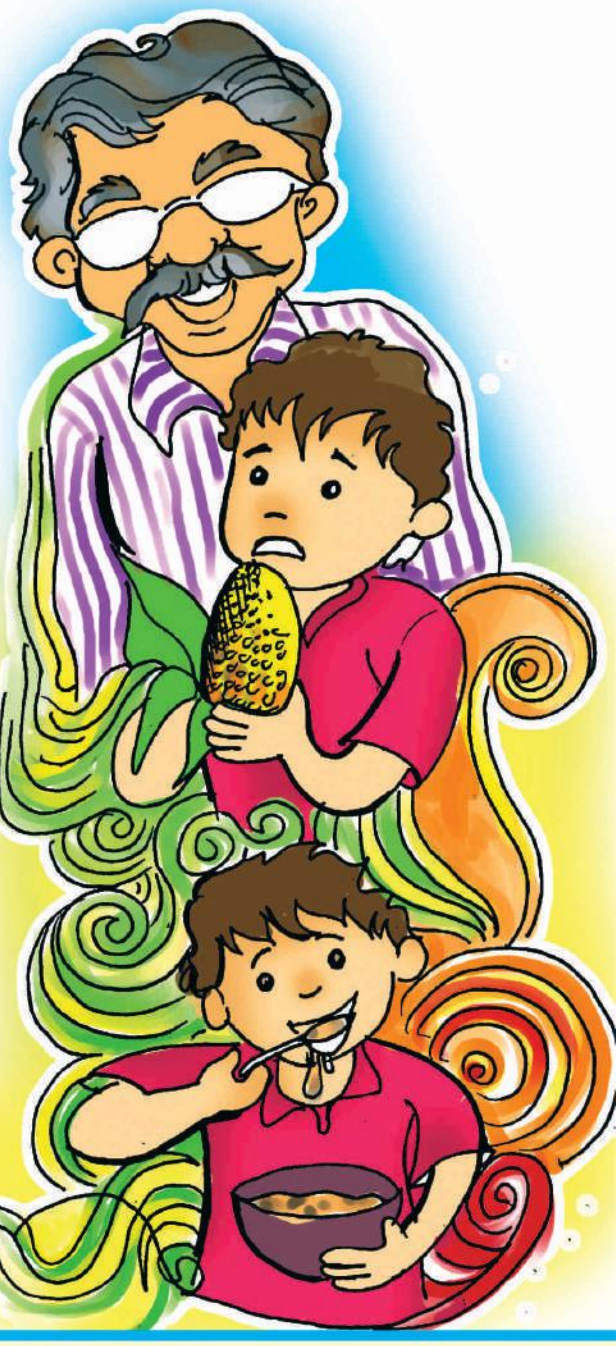

मुन्ना बोला, ''दाँत न मेरे,
कैसे भुट्टा खाऊँ ?
दादाजी, अपने ही दे दो,
मैं भी दाँत लगाऊँ!

''नहीं जरूरी खाना इसको,
इसका ''सूप'' बना लो!
खुद तो अभी बनाओगे क्या,
अम्मा से बनवा लो!''
दादा बोले, ''मुँह खोलो तो,
आओ, तुम्हें पिलाऊँ!''

''बात बनेगी बढ़िया, यदि जो
कॉर्नफ्लैक्स मँगवा लो!
रबड़ी जैसा इसे बनाकर,
डाल दूध में खा लो!''
चम्मच लेकर दादी बोलीं
''लाओ, मैं भी खाऊँ !''

''नमक मिले पानी में इसके,
दाने खूब उबालो!
एक-एक कर डालो मुँह में,
कुचुर-कुचुरकर खा लो!''
कहे पिताजी उठा गोद में,
''मैं भी साथ निभाऊँ!''

• खटीमा (उत्तराखण्ड)

आसानी से बनाओ और रंग भरो।

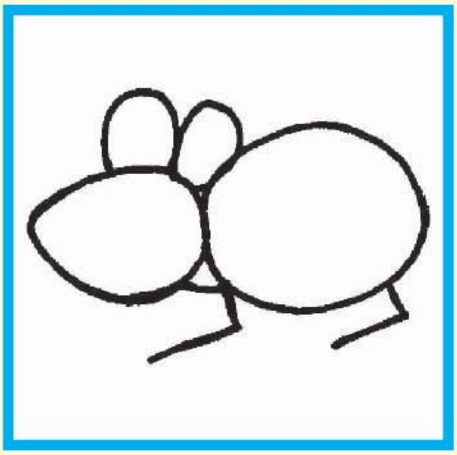

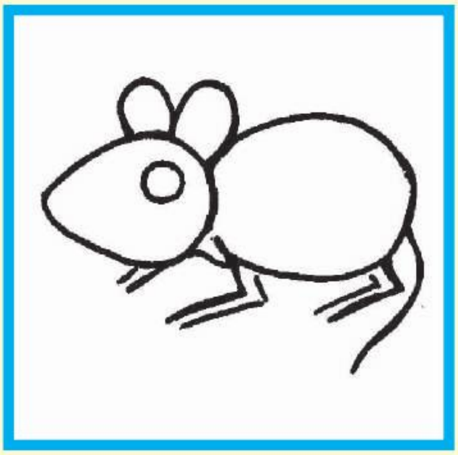

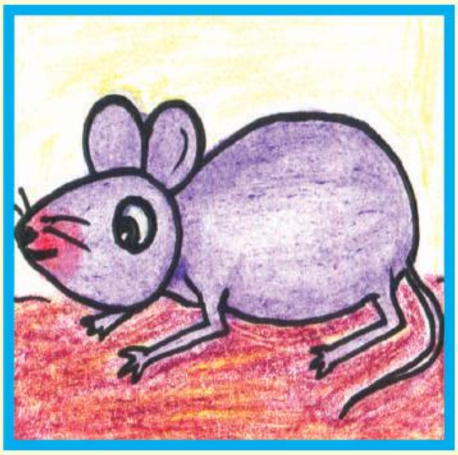

गुण
चित्रकथा-
रवि और शंकर अच्छे दोस्त थे एक बार बातचीत के बीच रवि बोला -
प्रत्येक व्यक्ति के अंदर कोई न कोई गुण होता है..
..मैं इस बात को नहीं मानता कि हर व्यक्ति गुणी होता है...
लेकिन मैं सही कह रहा हूं दोस्त..!
अच्छा, तो तुम अपने आप को ही लो जरा जानूं तो तुममें क्या गुण है?
मेरे अंदर सामने वाले के गुण को समझने का गुण है.
तब तो तुम ये भी जानते होगे कि मुझमें क्या गुण है..
बिल्कुल. तुम्हारे अंदर किसी व्यक्ति के गुण को न समझने का गुण है...

बड़े लोगों के
हास्य प्रसंग

स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले सम्राट जार्ज पंचम के तिलकोत्सव पर अतिथि के रूप में लन्दन गए थे। गोखले वहाँ के प्रधानमंत्री के पास खड़े ब्रिटिश फौजों की परेड देख रहे थे। इस परेड में सिख जवानों की भी एक पलटन उनके सामने से गुजरी। इन सिपाहियों को देखकर चारों ओर तालियां पिटने लगीं। श्रीमान गोखले बिलकुल चुप थे। न उन्होंने तालियाँ बजाई और न उनके मुखमण्डल पर प्रसन्नता का कोई चिन्ह दिखाई दिखा। यह देखकर प्रधानमंत्री ने उनसे पूछा – ''क्या कारण है, आपने अपने देशवासियों को देखकर ताली नहीं बजाई।''

गोखले जी ने तुरंत उत्तर दिया– ''मैंने अपनी तालियाँ उस जाति के लिए सुरक्षित रखी हुई है जिसने इन बहादुरों को गुलाम बना रखा है।''

गोखले का यह जवाब सुनकर सभी ने अपनी आँखें नीची कर ली।

*****

महामना मदनमोहन मालवीय का भाषण सदा गम्भीर लम्बा और धार्मिक भावना से परिपूर्ण हुआ करता था। एक बार स्वराज्य भवन में कोई सभा हो रही थी जिसके अध्यक्ष पंडित मोतीलाल नेहरू थे। मालवीय जी की बारी आने पर मोतीलाल जी मुस्करा कर बोले, ''अब आप मालवीय जी का पुराण भी सुनिए।''

मालवीय जी इस चुटकी का तुरंत उत्तर देते हुए कहा, हाँ, मोतीलाल जी, मेरा पुराण ध्यान से सुनना। निष्ठापूर्वक पुराण सुनने से आपका कल्याण होगा।''

।। बाल प्रस्तुति ।।

रखवाले

कविता

~ अमित जैन

देश हमें है अपना प्यारा
हम उसके रखवाले हैं
कोई कितनी धौंस जमाए
कभी न डरने वाले हैं।
बात वही करते हैं हम
जो पूरी कर दिखलाते हैं।
बड़ी-बड़ी ताकत वालों को
अच्छा सबक सिखाते हैं।
हम नहीं अक्ल के कच्चे हैं।
हम भारत माँ के बच्चे हैं।
पावन इसकी चन्दन माटी
हम सब शीश नवाते हैं।
कोई भी जो भटक गया हो
उसको राह दिखाते हैं।
आँख दिखाए दुश्मन तो हम
कभी नहीं घबराते हैं।
अपनी धुन के पक्के हैं।
हम भी भारत माँ के बच्चे हैं।

• हरदा (म.प्र.)

राष्ट्र ध्वज तिरंगा

● डॉ. सीताराम गुप्त 'दिनेश'

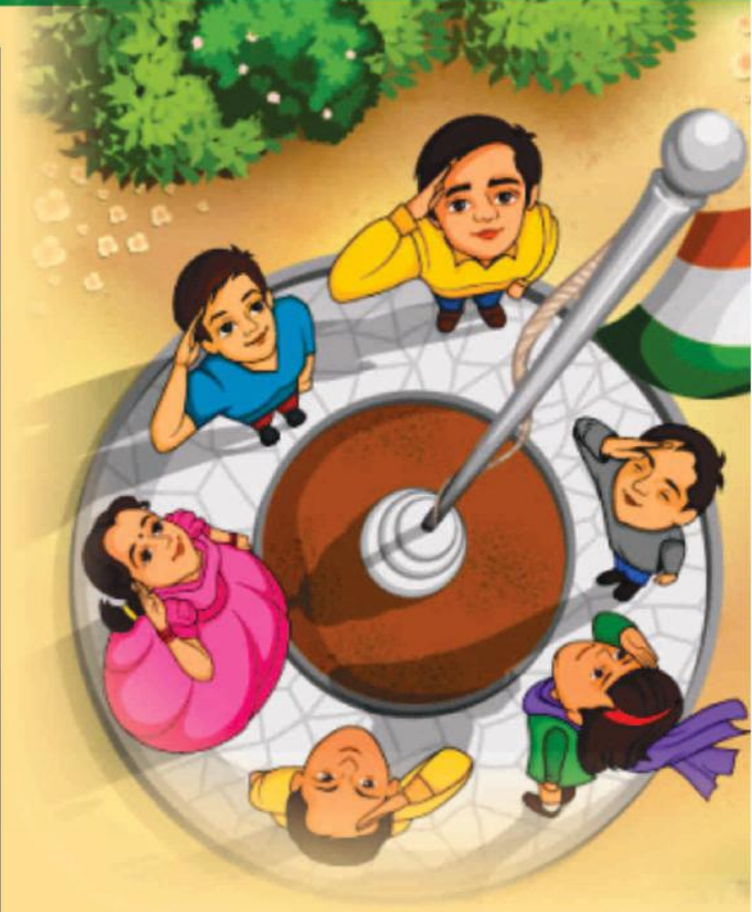

सबसे सुन्दर सबसे ऊँचा,
झण्डों का सरताज तिरंगा।
सूरज से बातें करता है,
अपना ध्वज राष्ट्रीय तिरंगा।।
चांद कर रहा स्वागत इसका
तारे अभिनंदन करते हैं।
पुलकित होता पवन,
गगन में लहराता जब मुक्त तिरंगा।।
भारत माँ का राज दुलारा
हम सबको प्राणों से प्यारा।
देशभक्त वीरों में भरता,
अनुपम साहस जोश तिरंगा।।
इस झण्डे की अमर कहानी
वीर शहीदों की कुर्बानी।
स्वाभिमान सम्मान राष्ट्र का
प्यारा विजयी विश्व तिरंगा।।
देख इसे पुलकित होता मन
इस पर न्यौछावर तन मन धन।
संस्कृति का प्रतीक यह सुन्दर,
है स्वदेश की शान तिरंगा।।
कश्मीर हो या अरूणाचल।
भारत का विशाल नभ जल थल।
बढ़ न पाये शत्रु इंच भर,
सीमाओं पर खड़ा तिरंगा।।
ससम्मान ध्वज फहरायें हम
भूल न हो कुछ ध्यान रखें हम।
ध्वज प्रयोग की सारी विधियाँ
समझें जब लें हाथ तिरंगा।।

● आलमपुर (म.प्र.)

तिरंगा झण्डा

• मनोज कुमार तिवारी

पावन सुन्दर ध्वज अपना यह,
लहर-लहर लहराये।
जन-गण-मन है गान हमारा
जन-जन भाव जगाये।
लहर-लहर लहराये।
तीन रंग का बना तिरंगा,
तीन भाव देता है।
केसरिया है रंग त्याग का
श्वेत शान्ति देता है।
हरा प्रकृति की सुन्दरता का
प्रेरक बनकर आये।
लहर-लहर लहराये।

झण्डा भीतर चक्र बना जो
गतिशील रहो समझाये।
सभी धर्म में रहे एकता
राष्ट्रगान हम गायें।
नमन हमारा उन वीरों को
जिनने प्राण गवायें।
लहर-लहर लहराये।
अपना झण्डा शान देश की,
इस पर हम बलि जायें।
उन्नति हो समृद्धि आये
श्रम के मंत्र जगाये।
ज्योतिर्मय हो राष्ट्र हमारा
जन-गण मंगल गायें
लहर-लहर लहराये तिरंगा
लहर-लहर लहराये।

• बड़ा मल्हरा (म.प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के दो श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'तिरंगा' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

....
....
....
....
....
....
....

अनोखा त्यौहार

कहानी

अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

''बकुल! चलो अब टी.वी. बंद करो और सो जाओ।'' टी.वी. के सामने बैठे कार्टून देख रहे बकुल से उसकी माँ ने कहा।

''माँ, थोड़ी देर और देख लेने दीजिए ना।'' बकुल बोला।

''नहीं...नहीं... बिलकुल नहीं। रात को देर तक जागोगे तो कल सबेरे सो कर उठने में परेशान करोगे।'' माँ ने डॉट लगाई।

''तो कौन–सा कल सवेरे विद्यालय जाना है...वैसे भी कल छुट्टी ही तो है।'' बकुल ने ठुनकते हुए कहा।

''छुट्टी ...? किस बात की छुट्टी है कल...?''

''क्यों...कल २६ जनवरी तो है... लेकिन तुमसे यह किसने कह दिया कि २६ जनवरी को विद्यालय में छुट्टी रहती है।''

''आज विद्यालय में मेरे मित्र बता रहे थे कि कल विद्यालय में पढाई नहीं होगी।''

''हाँ...यह बात सही है। कल विद्यालय में पढ़ाई नहीं होगी। लेकिन विद्यालय तो खुलेंगे ही कल। कल गणतंत्र का त्यौहार मनाया जाएगा इसलिए विद्यालय तो जाना ही होगा'' माँ बोली।

''त्यौहार ...? तो... कल कोई त्यौहार है क्या माँ?''

''ऐसे नहीं पहले तू टी.वी. बंद करके मेरे पास बिस्तर में आ फिर बताऊँगी मैं।'' माँ ने कहा तो बकुल ने टी.वी. बंद कर दी और माँ के पास रजाई में घुस कर बोला– ''हाँ अब बताइए माँ !... क्या बता रही थी आप...।''

''मैं यह बता रही थी बेटू! कि कल के दिन त्यौहार है...। हमारे देश का सबसे बड़ा त्यौहार।'' माँ ने बकुल को प्यार से अपनी गोद में चिपकाते हुए कहा।

''कौन सा त्यौहार माँ...?''

''बेटा कल गणतंत्र दिवस का त्यौहार है।''

''गणतंत्र दिवस का त्यौहार...? यह किन लोगों का त्यौहार होता है माँ...? मेरा मतलब हिन्दुओं का कि मुसलमानों का या इसाईयों का। यह २६ जनवरी का त्यौहार किस का होता है?'' बकुल ने पूछा।

''यह हम सभी का त्यौहार है बेटा! यह किसी जाति या धर्म का नहीं बल्कि इस देश में रहने वाले सभी लोगों का सभी भारतवासियों का त्यौहार है।'' माँ बोलीं।

''लेकिन ऐसा तो नहीं होता माँ। हमारे यहाँ तो सभी लोगों के त्यौहार अलग–अलग बंटे हुए हैं। जैसे होली, दीवाली, दशहरा, वैसाखी हम हिन्दुओं के त्यौहार है, ईद, मोहर्रम, मुसलमानों का है, क्रिसमस इसाईयों का।''

''हाँ बकुल तुम्हारी बात भी सच है। हमारे देश में सभी धर्म के लोगों के अलग–अलग त्यौहार होते हैं लेकिन २६ जनवरी का त्यौहार एक ऐसा अनोखा त्यौहार है जो सभी का है। इस त्यौहार को जितनी धूमधाम से हिन्दू मनाते हैं उतनी ही खुशी और धूमधाम से मुसलमान, ईसाई आदि सभी धर्मों व सभी जातियों के लोग। एक और खास बात यह है कि बाकी सभी त्यौहारों की तारीखें आगे पीछे खिसकती रहती हैं लेकिन यह अनोखा त्यौहार हर वर्ष जनवरी महीने की २६ तारीख को ही होता है।

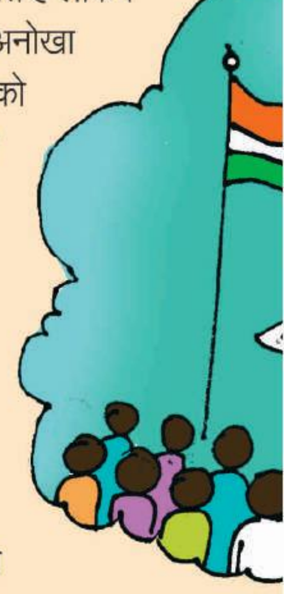

''लेकिन यह त्योहार हम किस कारण से मनाते हैं माँ? बकुल ने प्रश्न किया।

''क्योंकि संविधान के अनुसार हमारा देश एक गणतांत्रिक देश है और सन् १९५० में इसी तारीख को हमारे देश का संविधान लागू हुआ था।''

''गणतंत्र का क्या मतलब होता है माँ?''

''देखो, गणतंत्र शब्द दो शब्दों 'गण' और 'तंत्र' से मिलकर

बना है। 'गण' का अर्थ है जनता यानी हम, तुम सभी लोग और 'तंत्र' का मतलब होता है वह व्यवस्था जिसके द्वारा शासन किया जाता है। इस प्रकार गणतंत्र का मतलब हुआ लोगों के द्वारा बनाई गई शासन व्यवस्था। तुम्हें याद होगा अभी कुछ दिनों पहले देश में चुनाव हुए थे। लोगों ने वोट देकर अपने प्रतिनिधि चुने थे। लोगों द्वारा चुने गए उन प्रतिनिधियों ने शासन चलाने के लिए सरकार बनाई। इसी व्यवस्था को गणतंत्र कहते हैं।'' माँ ने बताया।

''और संविधान क्या चीज होती है?''

''संविधान का मतलब है वह सारा नियम, कानून और तौर-तरीका जिसके अनुसार सरकार अपना काम करती है। हमारा संविधान एक पुस्तक के रूप में है जिसमें लिखा है कि लोगों की भलाई के लिए सरकार को कौन-कौनसा काम करना चाहिए और कौन सा काम नहीं करना चाहिए। इसके अलावा हम सभी की अपने देश और समाज के प्रति क्या-क्या जिम्मेदारियाँ हैं यह भी उसी किताब में लिखा है।'' ''और इस त्यौहार को मनाते कैसे हैं माँ? होली पर तो रंग खेलते हैं, दीवाली पर हम घर की सजावट करते हैं, पटाखे छुड़ाते हैं...लेकिन इस त्यौहार पर क्या करते हैं?

२६ जनवरी के दिन सवेरे दिल्ली में लाल किले पर देश के राष्ट्रपति महोदय राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराते हैं। पूरे देश में सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों और शासकीय, अशासकीय कार्यालयों के ऊपर झंडा फहरा कर राष्ट्रगान गाया जाता है। मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं। बहुत सारे लोग अपने घरों के ऊपर भी झंडा फहराते हैं। उसके बार जगह-जगह तरह-तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विद्यालयों में खेलकूद गायन, वादन, नाटक और वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। बच्चों को मिठाई और पुरस्कार दिए जाते हैं। समाजसेवी संस्थाओं के लोग अस्पतालों में रोगियों को तथा गरीब लोगों को कपड़े, फल और मिठाईयाँ आदि बाँटते हैं।''

''लेकिन मेरे विद्यालय में तो दीदी ने ऐसा कुछ नहीं बताया है।''

''हाँ बेटा! अब लोगों में पहले जैसा उत्साह नहीं रहा। अब तो जैसे तैसे झंडा फहरा कर और राष्ट्रगान गा कर खानापूर्ति कर ली जाती है। विद्यालयों में भी अब पहले जैसे कार्यक्रम नहीं होते हैं। लेकिन पहले ऐसा नहीं था। जब हम लोग छोटे थे उन दिनों इस त्यौहार को बहुत उत्साह और धूमधाम से मनाया जाता है। विद्यालयों में तो इसकी तैयारी दस-पन्द्रह दिनों पहले से ही होने लगती थी। लोग कई दिनों पहले से ही भोर के वक्त झांझ-मजीरा लिए, गले में ढ़ोलक, हारमोनियम लटकाए राष्ट्रप्रेम के गीत गाते, बजाते हुए शहर में प्रभात फेरी निकाला करते थे। २६ जनवरी के दिन हाथों में तिरंगा लिए विद्यालय के बच्चों और अध्यापकों की रैली निकलती थी। जो भारत माता की जय, सुभाषचंद्र बोस की जय, महात्मा गाँधी की जय आदि के जय घोष लगाते हुए पूरे शहर में घूमती थी। लोग आपस में मिलकर एक दूसरे को बधाई देते थे। लोग अपने मकानों, दुकानों और वाहनों पर भी तिरंगे झंड़े लगाते थे।'' बकुल की माँ अपनी धुन में कहती चली जा रही थीं। उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया कि बकुल उनकी बातें सुनते-सुनते कब का सो चुका था।

● लखनऊ (उ.प्र.)

यह देश है वीर जवानों का (४)

नायक जादुनाथ सिंह

२० अक्टोबर १९४७ पाकिस्तान श्रीनगर पर तो कब्जा करना चाहता ही था लेकिन उसके भेजे आक्रमणकारियों ने जम्मू के पुंछ, कोटली, मीरपुर, झाँगर, नौशेरा, भींबर, रजौरी, छंब अखनूर, रणबीर सिंह पुरा, सांबा से लगाकर कठुआ तक के क्षेत्र की भी घेराबन्दी कर ली थी। जम्मू कश्मीर की सेना अपने हर संभव प्रयत्न व पराक्रम से इस आक्रमण को असफल बनाती भारतीय सेना की सहायता पाने की प्रतीक्षा कर रही थी। झाँगर को ६ हजार आक्रमणकारियों के भीषण चंगुल से २ पंजाब बटालियन के थोड़े से सैनिकों ने ही अदम्य शूर-वीरता से मुक्त करा लिया।

अनुमान था कि दुश्मन का अगला निशाना नौशेरा होगा। नौशेरा के उत्तर में कोट पहाड़ी पर कब्जा करके डटा शत्रु वहीं से सारे शहर पर गिद्ध दृष्टि जमाए बैठा था। ब्रिगेडियर उस्मान ने भी इस हमले को रोकने और कोट पहाड़ी को मुक्त कराने के लिए कमर कस ली थी।

१ फरवरी, १९४७, ५० पैरा बिग्रेड ने रातोरात आक्रमण कर अपना नौशेरा वापस ले लिया। दुश्मन को भारी क्षति उठाकर दुम दबाए पीछे हटना पड़ा। लेकिन घायल श्वान की भांति बिलबिलाए शत्रु ने ६ फरवरी को १५ हजार की संख्या में नौशेरा को लपकने छोड़ दिया। तैंधर की पहाड़ी पर से वह निरंतर आक्रमण कर रहा था जिसे १ राजपूत बटालियन रोक रही थी। भारतीय सैनिक न केवल गोलाबारूद से बल्कि सामने आने पर हाथापायी तक से दुश्मन के दाँत खट्टे कर रहे थे। दुश्मन को करारी शिकस्त मिली।

अद्वितीय पराक्रम, शौर्य एवं साहस के लिए इस रेजिमेंट के अनेक वीर वीरता पदकों से सम्मानित हुए उनमें सर्वोच्च सम्मान इस राजपूत रेजीमेंट के नायक जदुनाथ सिंह को मिला ''परमवीर चक्र'', लेकिन यह सम्मान पाने के पूर्व ही वे तो मातृभूमि की गोद में चिरनिद्रा में लीन होने का सम्मान पा चुके थे।

।। समाचार ।।

राष्ट्रीय बाल कहानी प्रतियोगिता परिणाम घोषित

राष्ट्रीय साहित्य पुस्तक मेला समिति, कटनी द्वारा १०वें साहित्य महोत्सव/बाल साहित्य महोत्सव एवं पुस्तक मेला के ६ दिवसीय आयोजन के अंतर्गत सम्पन्न राष्ट्रीय बाल साहित्य प्रतियोगिता के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं। परिणाम निम्नानुसार है।

(१) डॉ. लता अग्रवाल, भोपाल
प्रथम २५०१/- मैं भी बापू बनूँगा

(२) रोचिका शर्मा, चेन्नई
द्वितीय १५०१/- करत करत अभ्यास के

(३) शिवचरण सरोहा, दिल्ली
तृतीय ११०१/- हवा

निर्णायक मंडल में प्रख्यात बाल साहित्यकार घमंडीलाल अग्रवाल (गुरुग्राम), ख्यातिलब्ध बाल साहित्यकार मो. अरशद खान (शाहजहांपुर) एवं सुपरिचित बाल साहित्यकार गोपाल माहेश्वरी, कार्यकारी सम्पादक देवपुत्र (इन्दौर) ने निर्णायक भूमिका निर्वहन की।

चयनित बाल साहित्यकारों को राष्ट्रीय साहित्य महोत्सव एवं पुस्तक मेला कटनी में बाल साहित्य महोत्सव में पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जाएगा।

किसका कौन सा नारा...

बच्चो, नीचे बने क्रांतिकारियों को पहचानो। और किसने कौन सा नारा दिया था, सही क्रमांक लिखो?

• राजेश गुर्जर

(उत्तर इसी अंक में)

छः अंगुल मुस्कान

● ऋषिमोहन श्रीवास्तव

एक लड़की की स्कूटी से, बाइक वाले की टक्कर हो गई, भीड़ एकत्र हो गई दो चार लोगों ने बाइक वाले के ऊपर हाथ रसीद कर दिए एक आदमी ने लड़की की स्कूटी उठाते हुए पूछा– बिटिया रानी, कहीं चोट तो नहीं लगी?''

लड़की– ''काका! चोट कैसी। यह तो रोजाना का काम है, स्कूटी सीख जो रही हूँ।

*****

पिन्टू के घर मेहमान आए उनके आगे खूब सारा नाश्ता रखा गया। जाते समय मेहमान पिन्टू से बोला– ''बेटा, आगे क्या करने की योजना है?''

पिंटू – ''बस आपके जाते ही मैं बिस्कुट और मठरी खाऊंगा, बरफी और रसगुल्ले तो आपने छोड़े नहीं।''

*****

शिक्षक – ''सल्टू यह बताओ तुम्हारी बाँयी जेब में ५००रु. का नोट है और दांयी जेब में १ हजार का नोट है, ऐसे में तुम क्या सोचोगे?''

सल्टू – ''बस यही कि आज मैंने किसकी पेन्ट पहन ली।''

● **ग्वालियर(म.प्र.)**

आपकी पाती

अक्टोबर १९ के अंक में अपनी कविता 'गांधी' देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। आश्चर्य इसलिए कि मैने यह कविता दो बार भेजी। पहली बार, संभवतया २ साल पहले और दोबारा सालभर पहले, किंतु उक्त रचना प्रकाशित हुई अब। मैं कल्पना नहीं कर सकता था कि देवपुत्र रचनाओं को इतना सहेजकर रखता है।

वैसे भी मैं देवपुत्र के लेखकीय परिवार का पुराना सदस्य हूँ। देवपुत्र में रचनाओं के साथ इतना सटीक और आकर्षक चित्रांकन होता है कि प्रकाशित रचना की अर्थवत्ता में चार चाँद लग जाते हैं। देवपुत्र में रचना का स्थान पाना किसी भी रचनाकार को गौरवान्वित करता है।

● **अश्वनी कुमार पाठक, सिहोरा (म.प्र.)**

बालकों को नैतिक दृष्टि से संस्कारित, साहसीक और राष्ट्रप्रेमी बनाने हेतु देवपुत्र का कोई सानी नही। व्यावसायिक घरानों की पत्रिकाओं से बालकों का मनोरंजन पहले भी होता था, अब भी होता है पर जो बात देवपुत्र में है वो कहीं नहीं। लगता है, हमें भी बचपन में यह पत्रिका पढ़ने को मिल जाती तो मन का सारा डर, हीनभावना, भूतप्रेतों का जादू टोने की आशंका समाप्त हो जाती । सम्पादक मण्डल को बधाई!

● **पूर्णिमा मित्रा, बीकानेर (राज.)**

भारत भू का गुणगान

कविता
बलवीर सिंह

आओ भारत भू का गुणगान करें,
पाला पोसा है जिसने,
उस धरा का गुणगान करें।। आओ भारत...
कण-कण में शंकर है जिसके,
जहाँ कल कल गंगा बहती है।
चहुँ दिशाएँ धाम है जिसके,
माँ सीता घर-घर रहती है।
युग-युग में हुए राम, कृष्ण,
उस देव धाम का सम्मान करें।। आओ भारत...
है वसुन्धरा यह वीर शिवा की,
राणा और गोबिन्द प्यारे की,
ले तलवार बिछा दी लाशें,
उन पापी हत्यारे की।
निज धर्म न त्यागा हो जिसने,
उन वीरों का ध्यान धरें।। आओ भारत...
मुरझा जाए चमन न उनका
जिसे खून से अपने सींचा
हो गए थे टुकड़े इसके
जब गद्दारों ने इसे था खींचा
अब सब अर्पित चरणों में माँ,
रणभूमि में चल हुँकार भरें।। आओ भारत...

● कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

कुल का दीप हमारी बिटिया

कविता
राजेन्द्र देवधरे 'दर्पण'

बाबा की है प्यारी बिटिया
माँ की बहुत दुलारी बिटिया।
दादी के मन को मोहे
जब मारे किलकारी बिटिया।
सुबह-सवेरे जल्दी उठती
सूरज सी उजियारी बिटिया।
घर-आंगन को यह महकाती
नन्ही सी फुलवारी बिटिया।
नित्य नए यह रंग बिखेरे
रंगों की पिचकारी बिटिया।
घर आँगन की जगमग इससे
कुल का दीप हमारी बिटिया।

● उज्जैन (म.प्र.)

पुस्तक परिचय

बाल साहित्य जगत में अपनी रसमयी, भावभरी, सरल, सुबोध लेखनी से अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले प्रसिद्ध बाल साहित्यकार **राजा चौरसिया** द्वारा लिखित दो बाल एकांकी संग्रह जिनमें से प्रत्येक में १०-१० एकांकी हैं जो आप पढ़ना ही नहीं खेलना भी चाहेंगे अपने विद्यालय में।

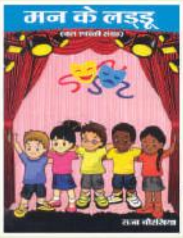

मूल्य ७५/-

मन के लड्डू

प्रकाशक

रुचिर संस्कार, त्रिपुरी चौक

गढ़ जबलपुर ४८२००३ (म.प्र.)

मूल्य १००/-

बात पते की

प्रकाशक

उषा पब्लिकेशन्स

मीना की गली, अलवर ३०१००१ (राज.)

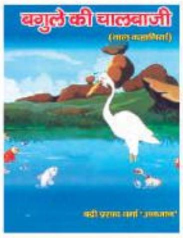

मूल्य १००/-

बगुले की चालबाजी

प्रकाशक

बाल स्वर सेवा संस्थान

सुमेर सागर, गोरखपुर

(उ.प्र.) २३७००१

वरिष्ठ बाल कहानीकार बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' की २६ प्रेरणादायी रोचक बाल कहानियाँ जिनमें मनोरंजन भी है और बहुत कुछ सीखने की बातें भी।

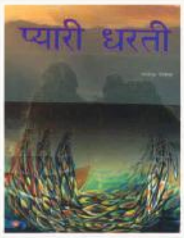

मूल्य ३९५/-

प्यारी धरती

प्रकाशक

अभिषेक पब्लिकेशन

५७-५९, सेक्टर १७-सी

चण्डीगढ़ १७

हिन्दी बाल साहित्य के मूर्द्धन्य साहित्यकारों में एक हैं राजेन्द्र निशेश। आपकी सरस लेखनी से उपजी ६४ श्रेष्ठ बाल कविताओं का संकलन जिसमं विषयों की विविधता एवं रोचकता दृष्टव्य है।

मूल्य १५१/-

परी लोक का भ्रमण

प्रकाशक

संरचना प्रकाशन

३० थार्न हिल रोड़, प्रयागराज

२११००१ (उ.प्र.)

डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न' बाल साहित्य में एक सुपरिचित समर्थ हस्ताक्षर है। आपकी बाल कहानियाँ बच्चों के लिए एक नए मनोरंजन भरे कल्पना लोक की सृष्टि करता है इस संग्रह में उनकी २१ आनन्दमयी बाल कहानियाँ हैं।

मूल्य ६०/-

तेल शोधक कारखाने और पर्यावरण

प्रकाशक

साहित्य संगम प्रकाशन

मोतीकुंज एक्सटेंशन, मथुरा

२८१००१ (उ.प्र.)

ख्यात रचनाकार संतोषकुमार सिंह द्वारा बालों व किशोरों के लिए लिखित इस उपन्यास में तेलशोधक कारखानों विषयक ज्ञानवर्द्धक जानकारी उपलब्ध है।

कुत्ता और बकरी

लघुकथा

मीरा जैन

मोहल्ले में रात के समय किसी भी अजनबी व्यक्ति को देखते ही कल्लू कुत्ता अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दौड़ता भी और भौंकता भी कुत्ते के इस आचरण को उसी मोहल्ले में रहने वाली बकरी हमेशा देखती। एक दिन उससे रहा नहीं गया और कल्लू कुत्ते के पास जाकर सहानुभूति प्रकट करते हुए बोली – ''कल्लू भाई! तुम बड़े अजीब हो मोहल्ले के लोग ना तुम्हे ढंग से खाना देते हैं ना पानी और तो और किसी के घर के सामने घर के आस–पास थोड़ी देर कभी सुस्ताने भी बैठ जाते हो तो कुछ लोग तो तुम्हें पत्थर मारकर भगा देते हैं फिर भी रात्रि में इन सबकी सुरक्षा हेतु हमेशा चौकन्ने रहते हो तुम्हारे जैसा मूर्ख मैंने आज तक नहीं देखा?''

इस पर मुस्कुराते हुए समता भाव से कल्लू ने जवाब दिया– ''बकरी बहन! मेरा मुख्य कर्तव्य ही पहरेदारी करना है और मैं इसे पूरे मनोयोग से निभाता हूँ यदि इसमें भी मैं अपना स्वार्थ देखने लगूँ तो मेरा जीवन ही बेकार है और जहाँ स्वार्थ है वहाँ कर्तव्य कभी जीवित नहीं रहता है।''

कल्लू कुत्ते के विचार सुन बकरी भाव विभोर हो सोचने लगी कि काश! औरों की सोच भी ऐसी हो जाए तो इस धरती को स्वर्ग बनते देर नहीं लगेगी।

● उज्जैन (म.प्र.)

चंदामामा

कविता

महेन्द्र सी. कपिल

चंदा मामा यान हमारा
क्यों ना तुमने उतारा?
घूम रहा था पास तुम्हारे
थका हुआ बेचारा।

गिरा हुआ है सतह तुम्हारे
उसको सीधा कर दो।
बैठो चाहे चंद्रयान में
फिर धरती पर उतरो।

चंदा मामा मन की आशा
हम सबकी अभिलाषा
साथ तुम्हारे हम भी घूमें
बोलें प्यार की भाषा।

● दुगाल खोंला (उत्तराखण्ड)

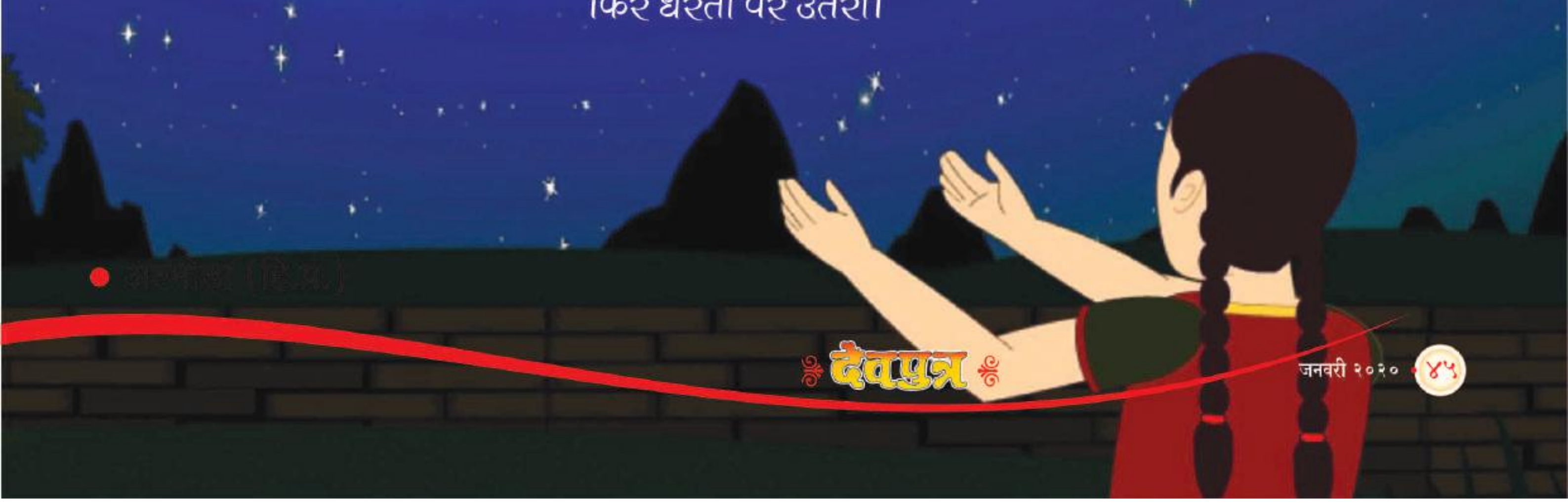

साँसः गले की फाँस

कहानी

डॉ. अमिताभ शंकरराय चौधरी

दुनिया का दूसरा सबसे ऊँचा दर्रा टांग लॉग ला पार करते ही बस मानो हिचकोले खाने लगी– घट् घट् भक् भक्... घच्च्। और देखते ही देखते बस वीरान सड़क के किनारे रुक गई। ड्राइवर चमरी साँड चमरन्चु ने कहा, ''लो जी, सब यहाँ उतर कर चाय पी लो। ५३७० मी. की. ऊँचाई पर ऑक्सीजन इतना कम हो जाता है कि न इंजन ठीक से चल सकता है और न मनुष्य ठीक से साँस ले सकता है।''

रीछप्रीत भालू, असम का गिब्बन लगूँर मस्तहरि, अरुणाचल का रेडपंडा लालछोंग और चीतेश्वर तेंदुआ चारों दोस्त मनाली से लद्दाख जा रहे हैं। ५१०० मी. की ऊँचाई पर दारचा से शिंगोला पहुँचते ही बर्फबारी होने लगी थी। बस की खिड़की से हाथ निकालकर बर्फ ले लेकर, गोला बना बनाकर चारों एक दूसरे पर फेंकने लगे, ''बंधु! सफर की मस्ती ले लो। खूब ठंडी बरफ से खेलो।''

''अबे! यह क्या कर रहा है? अपुन को निमोनिया हो जाएगा'' बेचारा लालछोंग अपनी लम्बी लाल दुम हिलाते हुए रीछप्रीत के पीछे छुप गया। वह तो ऐसे ही सुस्त है।

रोएँदार चमड़ा और खाल के नीचे मोटी चर्बी होने के कारण रीछप्रीत को तो कुछ नहीं हो रहा था रोओं के बीच की हवा शरीर की गर्मी को बाहर आने नहीं देती। तेज हवा चलने के कारण जल्दी बर्फ नहीं जमतीं।

''भाई जी! फटाफट चार चाय देना।'' बस से उतर कर चारों बगल के ढाबे की बेंच पर बैठ गए।

बस से उतरते ही मस्तहरि गिब्बन को चक्कर आने लगा, ''अरे यारा! आपनु को यह क्या हो रहा है? मेरा दिमाग घूम रहा है।मेरी हॅफनी छूट रही है।''

बायोलॉजी का प्रोफेसर रीछप्रीत ने समझाया, ''यहाँ हवा में ऑक्सीजन मैदान की अपेक्षा ३०–४० फीसदी कम है, तो साँस लेने में दिक्कत होती है और चक्कर आने लगते हैं।''

''में में, ढाबावाले घुँघरालो भेड़ ने आकर कहा, ''कल रात यहाँ के गुम्फा से एक तांखा चोरी हो गया है, इसलिए पुलिस जब तक चोर को पकड़ नहीं लेती, इधर की दुकानें बंद हैं।''

''अरे तो मारे ठंड के हम मर जायेंगे।'' चीतेश्वर हाँफ रहा था, मैदान में ७० कि.मी. की रफ्तार से दौड़ने से भी उतनी साँस नहीं फूलती। सिर्फ दिल तेज चलने लगता है।

और बोला– ''रीछप्रीत के ऐनक पर ओस जमने लगी थी। उसने उसे साफ किया और बोला ''क्योंकि हृदय को पूरे शरीर में खून पंप करना पड़ता है। दौड़ते समय ऊर्जा के लिए उसे सारे शरीर में और ज्यादा ऑक्सीजन पहुँचाना रहता है, तो हृदय का पम्प और तेज काम करने लगता है। साथ ही साँस भी तेज हो जाती है। क्योंकि लोहार की धौंकनी की तरह नाक से हवा खींच कर ऑक्सीजन को खून में पहुँचाना जो रहता है।''

इतने में ढाबे के भीतर से पीला जामा और मेरून चोगा पहने लामा म्याऊँग्याल बिल्ला और लद्दाखी इन्सपेक्टर हिम्मांचु हिम तेंदुआ निकल आया, ''अरे घुँघराले! चार चाय बना दे, वरना ये तो खत्म हो जायेंगे।''

म्याऊँग्याल ने अपने झोले से कपूर निकालकर चीतेश्वर और मस्तहरि को दिया, ''लो रुमाल में लगाकर सूँघ लो। साँस की तकलीफ कम हो जायेगी।''

कर्पूर की सूँघते ही दोनों को आराम होने लगा, ''वाह! गजब! मगर यह चोरी का मामला क्या है जी?''

गब्बर सिंह की तरह हिम्मांचु अपनी सफेद पूँछ को झटकारते हुए कहने लगा, ''कल शाम एक भेड़िया और एक हाईन टूरिस्ट बन कर यहाँ आये थे। म्याऊँग्याल से वो कहने लगे– हम पाली भाषा में रिसर्च कर रहे हैं। इसलिए गुफा यानी

मठ के पुराने तांखा जरा देखना चाहते हैं।''

''यह तांखा क्या होता है जी?'' मस्तहरि छलांग लगाकर चार कुर्सिओं को पार कर गया, हम तो खाली तनखा ही जानते हैं, यानी सैलरी, पगार।''

''अरे नहीं।'' म्याऊँग्याल हँसने लगा, कपड़े पर बने बुद्ध या जातक कथाओं के चित्र को तांखा कहते हैं। नेपालराज लिच्छवी की बेटी भृकुटि का ब्याह हुआ था तिब्बत के शासक सोंगत्सान गाम्पो के साथ। तो राजकुमारी के साथ यह कला वहाँ पहुँच गयी और सारे बौद्ध मठों में ढेर सारे चित्र बनने लगे।''

''विदेशों में इनकी बहुत कीमत होती है। तो वे इन्हें वहाँ ले जाकर ऊँचे दामों में बेच देते हैं।'' हिम्मांचु गुर्राता रहा, ''खैर, भागकर जायेगा कहाँ? मैंने सारी जाँच चौकियों पर खबर भेज दी है। चोर यहीं कहीं छिपा होगा।''

शाम हो गई थी। चमरान्चु ने आकर बताया, ''अँधेरे में इस सड़क पर बस ले जाने में खतरा है। आज रात यहीं बिता लो। कल सुबह चलेंगे।''

''तुलसी अदरक वाली चाय पीते–पीते लालछोंग ने साँस छोड़ी, तो नाक मुँह से भाप निकलने लगी। चीतेश्वर चिल्लाने लगा,'' अबे तेरे फेफड़े में आग लग गई है।''

''अरे बुद्धू, साँस में हम ऑक्सीजन लेते हैं और कार्बनडाई आक्साइड छोड़ते हैं। साथ में जलवाष्प भी होते हैं। मैदानों में दिखाई नहीं पड़ते। मगर यहाँ तापमान शून्य से नीचे होने के कारण साँस की भाप पानी बनकर जम जाती है।'' रीछप्रीत भाषण पिलाने लगा।

लालछोंग धीरे–धीरे कहने लगा, ''मालूम है न? पेड़ भी साँस लेते हैं। तभी तो जाड़े की सुबह खेतों के ऊपर कुहासे छाये रहते हैं।''

''मगर हम रात में रहेंगे कहाँ? खायेंगे क्या?'' मस्तहरि और चीतेश्वर परेशान हो उठे।

काफी कहने पर म्याऊँग्याल भन्ते राजी हो गये, ठीक है। हमारे मोनास्ट्री के एक कमरे में रात का डेरा जमा लेना। मगर खाने के लिए तुम्हें शिंगोला के बाजार में जाना पड़ेगा।''

मरता क्या न करता? वे उसी पर राजी हो गये। चारों ने घुँघरालो को भी मना लिया, ''यारा! हम चारों के पेट में डालने के लिए थोड़ा चावल, दाल, सब्जी बना देना।''

ना ना करते हुए घुँघरालो राजी हो गया और बोला, '' पहले चलो गाँव से कुछ सब्जी खरीद लाते हैं। चारों उसके साथ निकल पड़े। ठंडी हवा बह रही थी। सॉय...सॉय...। मानो चमड़ी को काट रही थी।

आलू गोभी खरीद लिया गया। फिर चीतेश्वर के लिए गोश्त और लालछोंग के लिए बांस की मुलायम पत्तियाँ लेकर वे वापस आ रहे थे कि सड़क की रोशनी में मस्तहरि ने इशारा किया, उधर उस स्तूप के पीछे देखो। कोई तो है नहीं, मगर धुआँ कैसे निकल रहा हैं?''

पाँचों एक दूसरे की ओर देखने लगे। रीछप्रीत ने सबको चुप रहने का इशारा किया। मस्तहरि छतों से लटकते हुए तुरंत वहाँ पहुँच गया। छुपकर उसने जो देखा उससे तो दंग रह गया। छलांग लगाते हुए वापस आकर फुसफुसाया उसने कहा, ''वहाँ एक भेड़िया और एक हाईना छुप कर बैठा है। उन्हीं की साँस से यह भाप निकल रही है। उनके हाथों में एक लम्बा सा मुड़ा हुआ कुछ रखा हुआ है।''

मामला सबको समझ में आ गया। रीछप्रीत ने चीतेश्वर से कहा, ''तू और घुँघरालो फट से जाकर हिम्मांचु जी को तुरंत यहाँ बुला ला। हम तीनों तब तक यहाँ पहरा दे रहे हैं। कही भाग न जाएँ।''

बेचारा लालछोंग शर्मा गया, ''अब मुझसे क्या होगा? मैं तो ऐसे ही सुस्तों का उस्ताद हूँ।''

फिर क्या था? जल्दी ही पुलिस फोर्स लेकर हिम्मांचु पहुँच गया। दोनों चोर पकड़ लिए गये। वह बेशकीमती तांखा उनके पास से बरामद हो गया।

प्रो. रीछप्रीत हँसकर मस्तहरि और चीतेश्वर की पीठ थपथपाने लगा, देख लिया न फेफड़े के धुँए की करामात? उनकी साँस का पानी हवा में जम रहा था तो पता चल गया– वहाँ अवश्य कोई छुप कर बैठा है।''

''वाह! उनकी साँस बन गई उनके गले की फाँस!'' मस्तहरि लालछोंग को कंधे पर बिठाकर एक डाली से झूलने लगा।

''अरे मुझे छोड़ दे रे भाई!'' शांत स्वभाव का लालछोंग परेशान हो उठा।

दोनों चोरों को पकड़ कर ले जाते हुए हिम्मांचु ने कहा, ''मैं सरकार से तुम लोगों को पुरस्कार देने को कहूँगा। लेह से वापस जाते समय अपना इनाम ले जाना न भूलना।''

• वाराणसी (उ.प्र.)

राम की समझदारी

चित्रकथा : देवांशु वत्स

अ.भा. पुस्तक विमोचन समारोह में साहित्यकारों का सम्मान

कुरुक्षेत्र। गुरुनानक जयंती पर कुरुक्षेत्र स्थित विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित अ.भा. साहित्यकार सम्मान समारोह में पंजाब, हरियाणा, असम, उ.प्र., दिल्ली, गोवा, महाराष्ट्र, गुजरात, एवं मध्य प्रदेश आदि प्रांतों से आमंत्रित लेखकों एवं साहित्यकारों को 'संस्कृति भवन साहित्य सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. रजनीश शुक्ला, कुलपति महात्मागांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा ने की। मुख्य अतिथि थे प्रो. अवनीश कुमार, अध्यक्ष वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग नईदिल्ली। विशिष्ट अतिथि श्री सुभाष सुधा विधायक, थानेसर थे। इस अवसर पर शिक्षा संस्कृति बाल साहित्य विषय पर 22 पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। जिनमें राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मा. दिलीप बेतकेकर की पालकाय नमः व हम सरस्वतीपुत्र, डा. ओरूंगटि सीताराम मूर्ति की भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक भावना, डा. मधुश्री सावजी की पंचकोशात्मक विकास के पथ पर, डा. देवी प्रसाद वर्मा, डा. श्रीराम चौथाईवाले व डा. देवेन्द्रराव देशमुख की एमिनेंट मेथेमेटिशियन्स ऑफ भारत, डा. रधुनाथ नारायण शुक्ल की रमेश चौगांवकर द्वारा अनूदित विश्व चैतन्य का विज्ञान, ज्योति थानकी की सर्वांगी शिक्षण, सुधा चौहान की बांलगीता, श्री वासुदेव प्रजापति की कथा जलियाँवाला बाग की, देवपुत्र के संपादक डॉ. विकास दवे की आजाद हिन्द सरकार, डॉ. वेदमित्र शुक्ल की कहावतों की कविताएं डा. नीलम राकेश , डॉ. फकीरचंद शुक्ला, डां. मंजरी शुक्ला की बालकथा पुस्तक जन्मदिन का उपहार एवं डॉ. नीलम राकेश, डॉ. देवेन चंद्र दास सुदामा, डॉ. मंजरी शुक्ला ओर राकेश चक्र की बालकथा पुस्तक लोक की कथाएं, डा. नीलम राकेश डा. मंजरी शुक्ला, डा. अरूण हेबलेकर, की संयुक्त विज्ञान कथा–कृति विज्ञान का अभ्यास अपने आसपास विमोचित की गई। इस अवसर पर देवपुत्र के कार्यकारी संपादक गोपाल माहेश्वरी की आठ पुस्तकें, बाल विनय पत्रिका, चंदासुने कहानी व परिवार हमारा (तीनों बाल काव्य), विश्वास की विजय बाल उपन्यास, प्रकृति माँ और प्राण पुष्पों को चढा गाता हूँ वन्देमातरम् (बाल नाट्य), जगसिरमौर बनाएँ भारत (सरस्वती वंदना की विस्तृत व्याख्या) एवं नानक नाम जहाज है चढै सो उतरै पार (जीवनी) लोकार्पित की गईं।

कार्यक्रम की भूमिका संस्थान के अध्यक्ष मा. श्री ललित बिहारी गोस्वामी ने आयोजन की प्रस्तावना एवं कृति एवं कृतिकार परिचय मा. श्री अवनीश भटनागर ने करवाया। अतिथि परिचय डॉ. रामेन्द्र सिंह ने कराया।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

सलिला संस्था सलूंबर (राज.) द्वारा स्वतंत्रता सेनानी ओंकारलाल शास्त्री स्मृति सम्मान पुरस्कार वर्ष २०२० के लिए अखिल भारतीय स्तर पर बाल साहित्य के अंतर्गत एकांकी लेखन प्रतियोगिता २०२० हेतु प्रविष्टि आमंत्रित हैं।

नियमावली निम्न प्रकार से हैं–

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक सभी बाल साहित्यकार अपनी मौलिक, अप्रकाशित, अप्रसारित, अमंचित मनचाहे विषय पर आधारित एकांकी हिन्दी में भेज सकते हैं। (शब्द सीमा १००० तक)

रचना कम्पयूटर पर टंकित तीन प्रतियों में भिजवानी होगी। रचना पर अपना नाम, पता न लिखें। प्रविष्टि के साथ रचनाकार अपना ५० शब्दों में लेखकीय परिचय, रचना की मौलिकता का प्रमाण पत्र एवं एक रंगीन छायाचित्र अवश्य भिजवाएं।

स्वतंत्रता सेनानी ओंकारलाल शास्त्री स्मृति पुरस्कार –

(वर्ग – १) एकांकी लेखन प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार ३ हजार

द्वितीय पुरस्कार २ हजार

तृतीय पुरस्कार १५००रु.

श्रेष्ठ एकांकी लेखन – ५ (प्रत्येक ५०० रु.)

(वर्ग –२) बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं की पुस्तकें (४ पुस्तक मनोनीत) रु. ८हजार नकद राशि।

पुरस्कृत होने वाले रचनाकारों को समारोह में स्वयं उपस्थित होना होगा।

चयन के पश्चात सभी रचनाकारों को सूचना दी जाएगी। उनकी आयोजन में सम्मिलित होने की स्वीकृति पर ही पुरस्कार की घोषणा की जाएगी तथा उनसे यह भी आग्रह रहेगा कि संग्रह के प्रकाशन तक अपनी रचना कहीं और प्रकाशित न करायें।

प्रतियोगिता के लिए भेजी गई एकांकी को परिणाम की घोषणा होने तक कहीं भी प्रकाशित, प्रसारित या मंचित न करावाएं यदि ऐसा पाया गया तो उस रचना को प्रतियोगिता में से बाहर किया जाएगा।

चयनित/ पुरस्कार रचना का कापीराइट सलिला संस्थान के पास रहेगा। सलिला संस्था उसे आपके नाम के साथ प्रकाशित, संकलित, मंचित करवायेगी। आप यदि उसका कोई उपयोग करना चाहेंगे तो सलिला संस्थान से पूर्वानुमति लेनी होगी।

अंतिम तिथि ३१ मार्च २०२० के बाद प्राप्त होने वाली रचनाओं पर विचार करना संभव नहीं होगा। रचनाएं निम्न पते पर रजिस्टर्ड डाक से भिजवाएँ।

डॉ. विमला भण्डारी, अध्यक्ष सलिला संस्था,
भंडारी सदन, पैलेस रोड़, सलूम्बर ३१३०२७
जिला उदयपुर (राज.)
सम्पर्क ०९४१४७५९३५९, ०९१४५८१५३९०

पुरस्कृत होने वाले रचनाकार/संभागी की उपस्थिति पर ही नकद राशि के साथ प्रशस्ति पत्र, शॉल आदि भेंट किया जाएगा। सलिला संस्था द्वारा आवास एवं भोजन की व्यवस्था रहेगी। संस्था किसी तरह का भत्ता या यात्रा व्यय देने में सामर्थ्य नहीं रखती है।

चित्र पहेली

नटखट चूहा किसकी सवारी कर रहा है? उसे देखने के लिए मिलाइए एक से ४९ तक के बिंदुओं को क्रमवार और फिर उसमें सुन्दर रंग भी भर दीजिए।

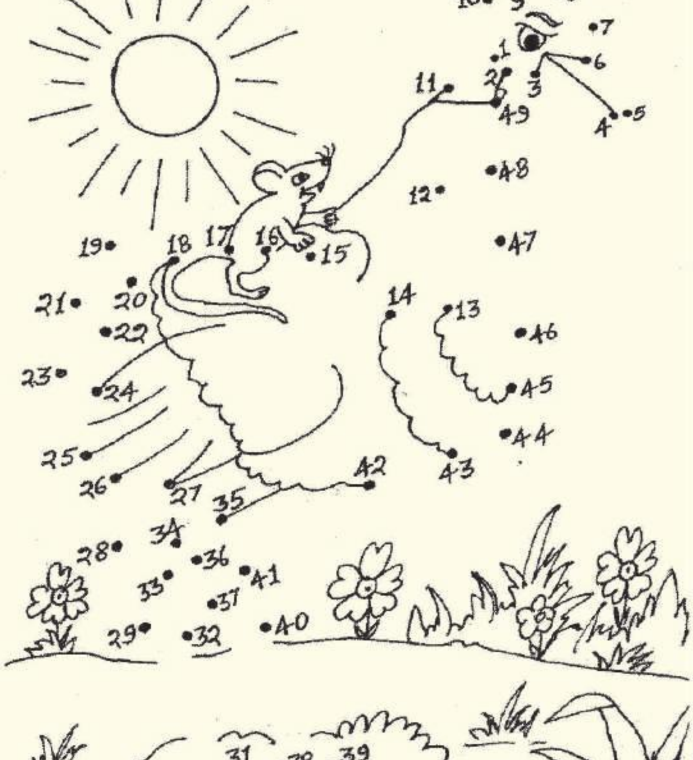

सही उत्तर : उलझ गए *– राजू और मोहन आपस में भाई है।*

किसका कौन सा नारा...	*मदनमोहन मालवीय – ऊ*
गांधी जी – ई	*लाल बहादुर शास्त्री – द*
बाल गंगाधर तिलक – स	*भगतसिंह – अ*
सुभाषचंद्र बोस – इ	*बंकिमचंद्र चटर्जी – उ*
लाला लाजपत राय – ब	

<u>प्रविष्टियां सादर आमंत्रित</u>

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु वर्ष २०१९ के लिए सभी बाल साहित्यकारों से उनकी प्रविष्टियाँ सादर आमंत्रित हैं।

- इस वर्ष यह पुरस्कार **बाल लोककथा** के लिए निश्चित किया गया है।
- आप अपनी इस विधा की कोई एक रचना **३१ मार्च २०२०** तक अवश्य भेज दें।
- रचना हिन्दी में हो।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवुपत्र' का होगा। जिसे देवपुत्र किसी प्रकाशन संस्थान के सहयोग से भी प्रकाशन की योजना कर सकता है।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाओं को क्रमशः **१५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००-५०० रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र** दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

प्रविष्टि भेजने का पता -

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहितय पुरस्कार २०१९

देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

<u>प्रविष्टियां आमंत्रित</u>

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९ के लिए **यात्रा वृत्तान्त** की पुस्तक हेतु प्रदान किया जाना निश्चित हुआ है। इसकी **पुरस्कार निधि ५०००/- पाँच हजार** रुपए है।

इस हेतु आपकी प्रकाशित कृति (पुस्तक) की तीन प्रतियाँ **३१ मार्च २०२०** तक निम्नांकित पते पर सादर आमंत्रित हैं।

प्रविष्टि भेजने का पता –

माया श्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१९

देवपुत्र बाल मासिक, ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

<u>प्रविष्टियां आमंत्रित</u>

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९

प्रिय बच्चो!

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक **श्री शान्ताराम जी भवालकर की स्मृति** में आयोजित इस प्रतियोगिता में आप बच्चों द्वारा लिखी गई मौलिक एवं स्वरचित कहानियाँ आमंत्रित हैं। आपकी कहानियाँ हमें **३१ मार्च २०२०** तक अवश्य मिल जाना चाहिए।

प्रतियोगिता के पुरस्कार हैं –

प्रथम १५००/–, द्वितीय ११००/–, तृतीय १०००/– एवं ५५०/– रुपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

अपनी कहानी के साथ अपना नाम, कक्षा, विद्यालय का नाम, घर का पूरा पता (पिनकोड सहित) अपना दूरभाष/मोबाइल नं. एवं अपना या अभिभावक का बैक खाता क्रं. आई एफ एस कोड़, खातेदार का नाम बैंक, शाखा का नाम भी अवश्य लिख भेजें जिससे पुरस्कार राशि सीधे उस खाते में जमा की जा सके। प्रविष्टि भेजने का पता –

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१९

देवपुत्र बाल मासिक, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२० आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१२/२०१९ प्रेषण तिथि ३०/१२/२०१९ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये
अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना